श्री स्वामिनारायण

सलंग अंक ९० अक्टूबर-२०१४ मासिक
मूल्य रु।. ५-०० प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

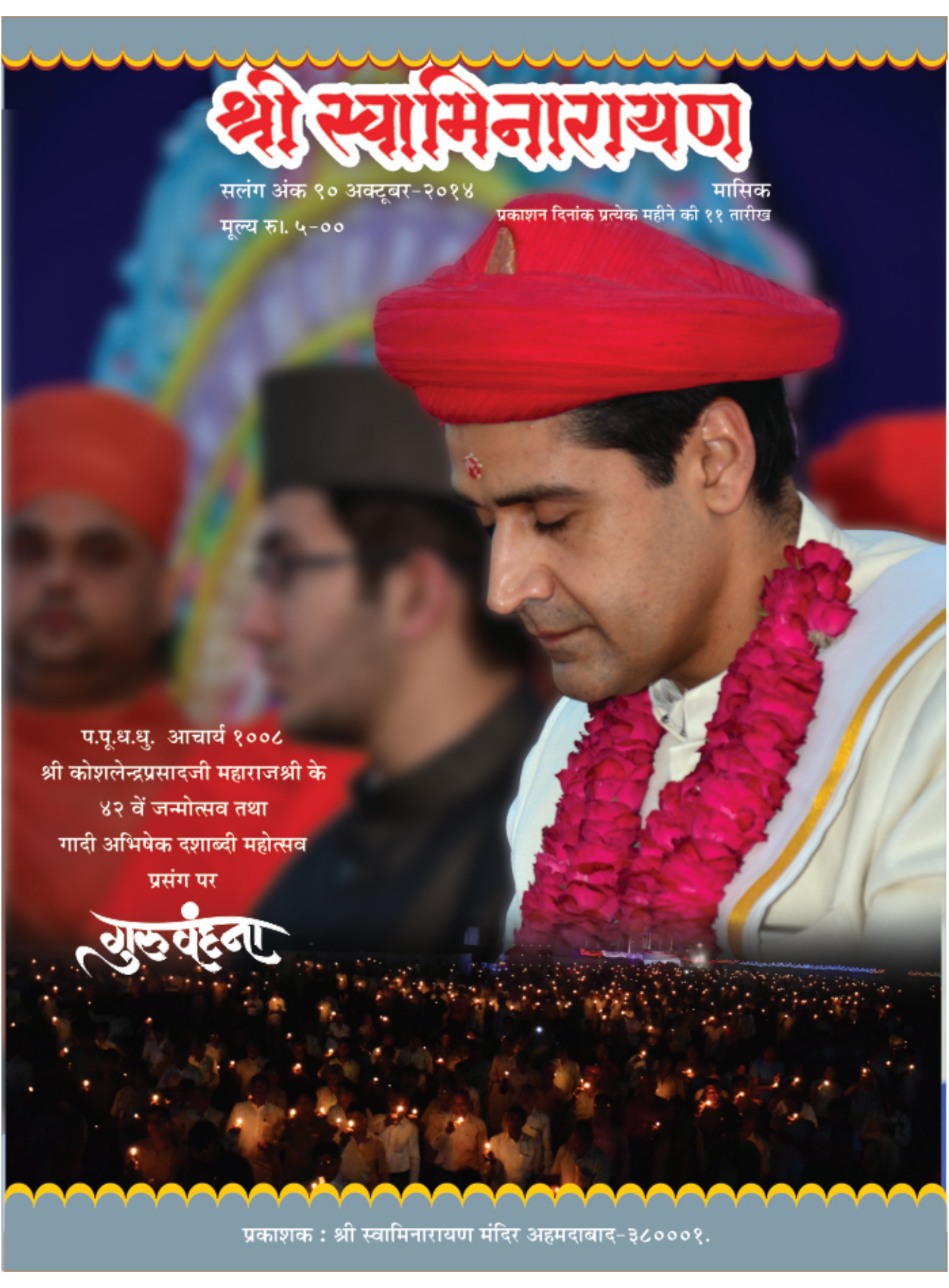

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के
४२ वें जन्मोत्सव तथा
गादी अभिषेक दशाब्दी महोत्सव
प्रसंग पर

गुरुवंदना

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮
શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ.મોટા મહારાજ
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ.લાલજી મહારાજ ૧૦૮
શ્રી પ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

His Holiness Acharya Maharaj
Shri Koshalendraprasadji Pande

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી ૧૦૮ શ્રી પ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Mandir, Ahmedabad-1
Tel: 079 2212 3835

Shree Swaminarayan Bagh,
Ahmedabad-52
Tel: 079 2747 8070

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ८ ● अंक : ९०

अक्टूबर-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	धर्मकुल संप्रदाय का मूल	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	कर्मनगरी अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर का "शताब्दी महोत्सव" धूमधाम से मनाया गया	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२१
०७.	सत्संग बालवाटिका	२३
०८.	भक्ति सुधा	२४
०९.	सत्संग समाचार	२६

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

देश विदेशमें रहने वाले श्री स्वामिनारायण मासिक अंक के वाचक एवं लेखक सभी सदस्यों को संवत् २०७१ के नूतन वर्ष का नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जयश्री स्वामिनारायण । प्रिय भक्तजन ! व्यापारी जिस तरह प्रत्येक वर्ष का हिसाब किताब निकालता है ठीक उसी तरह हमने भी आत्मकल्याणार्थ यत्न किया या नहीं तथा जगत के व्यवहार के लिये परिश्रम किया इसका हमें लेखा जोखा करना चाहिये । यदि जीवात्मा के लिये क्रिया की गई होगी तो चिन्ता नहीं, लेकिन जगत के लिये पुरुषार्थ अधिक करने से बैलेन्स बढ गया होगा तो नूतन वर्ष के प्रारम्भ से चिन्तन के साथ भगवान की भजन-भक्ति की जीयेगा । अपना व्यवहार जितना अच्छा होगा (पवित्र होगा) उतनी ही धन्धे में बरक्कत होगी । पुराने झगड़े झन्झट को भूलकर हिल मिलकर एक साथ रहियेगा । भगवान के गरीब भक्त का कभी द्रोह न हो जाय इसका सदा ध्यान रखना । अन्यथा भगवान अपने उपर कभी प्रसन्न नही होंगे ।

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वाँ जन्मोत्सव तथा गादी दशाब्दी महोत्सव कलोल में हम सभी मिलकर बड़े धूमधाम से मनाये । दश वर्ष में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने देश विदेश में सत्संग के लिये कितना विचरण किया यह सभी हम सभी के ज्ञानपथपर आया । सामान्य मनुष्य भी इस वात को समझ सकता है कि इतना बड़ा भगीरथ पुरुषार्थ (देश विदेश में लगातार धर्मार्थ विचरण) भगवान या तो भगावन के अनुगामी अपर स्वरुप ही कर सकते है, और कौन कर सकता है । इनके द्वारा ही हम सभी का कल्याण है यह वात सभी को निश्चित समझलेना चाहिये । इन्ही की आज्ञा में हम सभी का सुख है यह निश्चित जानना ।

आगामी श्री नरनारायणदेव महोत्सव अब नजदीक आ गया है । आपके गांव में कदाचित संत पहुँच नही पाये हों तो गाँव के भक्त अपने गाँव की भेंट कोठारीजी को अथवा प्रतिनिधिको या श्री नरनारायणदेव युवक मंडल या अमदावाद मंदिर में जमा कराकर पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करलें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१४)

१ से १६ ता. तक दिवेश अमेरिका तथा केनेडा के नये विस्तारों में सत्संग विचरण।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर देवरासण (जि. महेसाणा)
पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण तथा वहां से खेरवा गाँव में पदार्पण।

३० महिसा (कठलाल)
श्री स्वामिनारायण मंदिर
में पदार्पण।

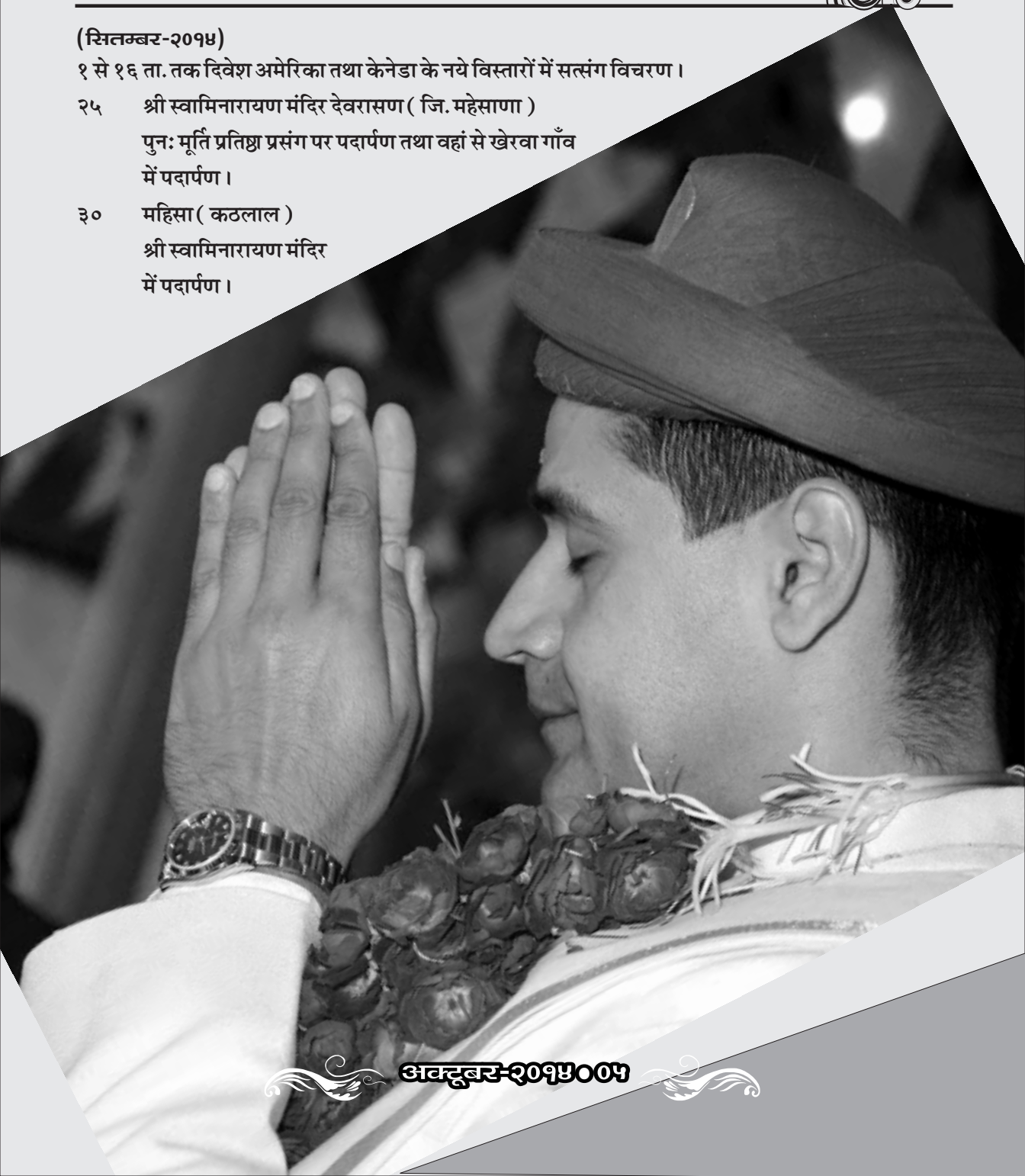

धर्मकुल संप्रदाय का मूल

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने उद्धवसंप्रदाय के विजय ध्वजा चारो दिशाओं में फरका करके अपने जीवन लीला की परिसमाप्ति कर रहे थे उस समय अपने उत्तराधिकारी का चिन्तन बहुत जरुरी था । संप्रदाय का भविष्य उत्तराधिकारीके ऊपर निर्भर करता है । इसलिये गोपालानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, इत्यादि संतो का अभिप्राय ले रहे थे । लेकिन बड़े बड़े संत पद प्राप्ति से अलिप्त रहना चाहते थे । एकवार ब्रह्मचारी वासुदेवनंदजी को जबरजस्ती गद्दी पर बैठाकर आरती किये तो स्वामी रोने लगे थे । जब स्वामी हाथ जोड़कर विन्ती किये तो महाराज उन्हें पूर्ववत स्थिति में कर दिये । स.गु. गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी उत्तराधिकारी का पद धर्मकुल वंश परम्परा में रहे ऐसा चाहते थे। इसलिये उन्होंने श्रीजी महाराज से प्रार्थना की कि त्यागी को गादी पद देने से संप्रदाय में त्यागी का त्याग तथा पद दोनो निष्फल साबित होगा । आपकी इच्छा से यदि ऐसा होता हो कि अक्षरधाम से किसी मुक्त की धर्मकुल में उत्पति हो तो ही संप्रदाय सुरक्षित रह सकेगा । इसके साथ ही त्यागी–गृहीको उसमें पूज्य भाव रहेगा । नंद पंक्ति के संतो के विशेष आग्रह पर बड़े भाई रामप्रतापभाई तथा छोटेभाई श्री इच्छआरामजी के एक एक पुत्र जिसमें से बड़े भाई के श्री अयोध्याप्रसादजी उम्र १७ वर्ष तथा रघुवीरजी की उम्र १३ वर्ष इन दोनों की उम्र छोटी थी फिर भी योग्य होने से इन्हें गादी पर बैठाया गया । महाराजकी आज्ञा के अनुसार तथा नन्द संतो की प्रेरणा से गादी पर गुरु के रुप में प्रतिष्ठित करके पूजन आरती की गयी ।

संवत १८८२ कार्तिक शुक्ल एकादशी को वडताल में आचार्य पद पर धर्मकुल की स्थापना करके पूजन आरती की गयी । महाराजने इस गादी पर जो भी धर्मकुलावतंश होंगे उनकी अपने जैसी सेवा करने की आज्ञा किये । इसके बाद सभी सत्संगी उनकी अनुवृत्ति में रहते थे । दोनो आचार्यश्री जैसा कहते वैसा सभी बड़े संत करते थे । जैसी भगवानकी आज्ञा वैसे सभी भावपूर्वक आचार्य महाराजश्री के सेवा में लगे रहते । दोनों में कोई भेदभाव नहीं रखते थे । दोनो आचार्यो को कोई छोटे उम्र का नहीं समझता था । संतो में कभी यहभाव आ भी जाता तो महाराज प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें उलाहना देते । धन्य उन नंद संतो को जो १७ वर्ष तथा १३ वर्ष की उम्र के बालकों को गुरुपद पर बैठाकर सर्वोपरि स्थान की सिद्धि को प्राप्त करवाये । स्वामिनारायण भगवान के त्यागी गृही दोनों की धर्मकुल में सम्पूर्ण आस्था रहती है । गोपालानंद स्वामी के हाथ में दोनो आचार्य का हाथ पकड़ाकर निवेदन किये कि धर्मकुल अखंडबना रहे ऐसा कीजियेगा । स्वामी बड़े थे फिर भी आचार्य पद की गरिमा को स्थान देते और स्वयं कभी बड़ा बनने की कोशिष नहीं किये । बड़े बड़े संत आचार्य महाराजश्री को दंडवत प्रणाम करते थे । अज्ञानता में कोई हरिभक्त आचार्य महाराजश्री की अपेक्षा संत को महत्व देता तो संत उन्हे दंड देते थे । धर्मकुल तो इस संप्रदाय का मूल है । मूल रहेगा तो साखा रहेगी । अन्यथा पांच–२५ वर्ष में सूख जायेगी । धर्मकुल को छोड़कर संप्रदाय में जो भी स्वयं का अस्तित्व बनाया है उसका अस्तित्व खत्म हो गया है । जिस तरह रामानंद स्वामीने सहजानंद स्वामी को उद्धव संप्रदाय का उत्तराधिकारी बनाया उस समय रामानंद स्वामी के १२ जितने अग्रगण्य शिष्य स्वामी के कार्य में असंतुष्ट होकर विरोधकिये थे । वे अलग होकर अपने विचारों का विस्तार करना चाहे लेकिन लंबे समय तक नहीं चला । निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तमप्रकाश में लिखा है कि धर्मकुल संप्रदाय का मूल है । धर्मकुल के पूजन से महाराज प्रसन्न होते हैं । संप्रदाय के आजतक के इतिहास में छोटी उम्र में आचार्यपद पर प्रतिष्ठापित करने का संयोग बना है । जिस में श्री नरनारायणदेव अमदावाद की गादी पर चतुर्थ आचार्य पद पर श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज ढाई वर्ष में प्रतिष्ठित हुये थे । उस समय के सन्त तथा हरिभक्त धन्य थे । धर्मकुल की परम्परा स्थाई बनी रहे इसलिये ढाई वर्ष के आचार्य का पूजन किये । उम्र तथा देह के भाव होने पर भी श्रीजी महाराज के पुत्र हैं इसलिये रक्षण किये । यह संप्रदाय तत्कालीत संत तथा भक्तों का उपकार कभी नहीं भूलेगा । भगवान के वचन को जो सत्य माने वही सच्चा सत्संगी । इसके अलावां वडताल के इतिहास में प.पू.ध.धु. लक्ष्मीप्रसादजी को ७ वर्ष की उम्र में गद्दी पर बैठाये । धन्य हैं वे सन्त जिन्होंने ७ वर्ष के आचार्य में भगवत् भावना रखी । आजकल तो लोग अपने को सर्वे सर्वा मानते हैं । उसमें भी यदि पांच पचीस प्रशंसक – पूजक हो गये तो क्या कहना ? त्यागी–गृही का कोई मेल ही नहीं है । जिसकी समझ बड़ी वह बड़ा ऐसा श्रीहरि का वचन है । महाराज के वचनानुसार धर्मकुल वंशी आचार्य में भगवान जैसा आदरभाव – पूज्यभाव रखकर उन्हीं की आज्ञा में जो रहे वही समझदार सत्संगी कहा जायेगा । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को प.पू. बड़े महाराजश्री गादी के ऊपर प्रतिष्ठित करके निवृत हो गये और स्वयं श्री स्वामिनारायण म्युजियम बनाये । लेकिन प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने समय की मांगको ध्यान में रखकर देश–विदेश में मूल संप्रदाय की परंपरा के सामन अनेकों स्पर्धाये थी उनसे लडने के लिये विचरण प्रारंभ किये । विचरण को मंत्र मानकर एक दिन भी अपने अन्तरंग काम में विना लगाये सत्संग के लिये निरन्तर विचरण करते रहे । २०१४ में कलोल पंचवटी मंदिर की तरफ से ४२ वाँ जन्मोत्सव ता. ४ अक्टूबर को

मनाया जा रहा है इस अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रमो की डायरी देखने के बाद विचरण करने जो रेकर्ड मिला उसमें स्वामिनारायण मासिक पत्रिका की देख भाल करने का वाले घनश्यामभाई चावडा से तिथि-वार तारीख के साथ सभी रेकर्ड मिल गये । जिस में गाँव गांव में प्रतिष्ठा, पाटोत्सव शाकोत्सव, सत्संग सभा, इत्यादि मिलाकर सितम्बर २०१४ तक १२४६ गाँवो में दश वर्ष के भीतर प.पू. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम हुये हैं । इसके अलांवा विदेश में २३ बार पदार्पण करके सत्संग विचरण किये हैं । इसके फल स्वरुप सत्संग में खूब जागृति आई है । साथ में नये-नये सत्संग केन्द्र प्रांरभ हुये हैं । देश में शिखरी मंदिरोकी संख्या १२ हरि मंदिरो की संख्या १५३ तथा विदेश में २१ मंदिरो का निर्माण कार्य १० वर्ष के भीतर कुल मिलाकर १८६ मंदिर का निर्माण प.पू. आचार्य महाराजश्री की देखरेख में हुये हैं ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वचन में अनुवृत्ति रखकर सत्संग की खूब वृद्धि किये हैं । संतो को प्रेरणा देकर देश के गाँवो में सत्संग प्रवृत्ति के कार्य क्रम कराकर सत्संग को पल्लवित कर रहे हैं । पाटोत्सव शाकोत्सव, सत्संग सभा, मंदिरो का निर्माण, जीर्णोद्धार, प्रसादी के स्थलों का जीर्णोद्धार के माध्यम से गाँव में नई चेतना मिल रही है । अभी भी कितने गाँवों में शिथिलता दिखाई देने पर उत्सवों के माध्यम से नये नये आयोजन कर रहे हैं । इसके अलांवा अपने जन्मोत्सव को मनाने के लिये अनुमति देकर आचार्य पद की गरिमा का प्रचार किये हैं । श्री घनश्याम महाराजकी जन्म भूमि छपैया में मंदिर के जर्जरित होने से वहाँ के महंत स्वामी ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजी को आज्ञा किये कि संप्रदाय में सर्वश्रेष्ठ स्थान महाराजकी जन्म भूमि हैं जिस पर अलौकिक भक्तिधर्म भुवन मंदिर में घनश्याम महाराज की मूर्ति तथा पुरानी प्रसादी की जगह को यथावत रखकर निर्माण कार्य करवाइये । जो कार्यप्रारंभ हो गया है और डेढ-दो वर्ष में पूर्ण भी हो जायेगा । महाराज की गरिमा का ध्यान रखकर विशाल धर्मभक्ति भुवन मंदिर का निर्माण कार्य हो रहा है । सत्संग विकाश में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने ८३ वार विदेश प्रवास करके जहाँ-जहाँ थोडी संख्या में भी हरिभक्त है वहाँ - वहाँ पदार्पण किये हैं । जहाँ पर मंदिर की आवश्यकता है - वहाँ मंदिर निर्माण की आज्ञा देते हैं । जहाँ पर सत्संग केन्द्र के माध्यम से साप्ताहिक सभा की आवश्यकता देखते हैं वहाँ पर मूल संप्रदाय के सिद्धान्त को सुरक्षित रखने के लिये सभाओं के लिये आदेश करते हैं ।

युरोप, यु.के., अमेरिका, आफ्रिका, मिडलइस्ट, केनेडा, न्युजीलेन्ड, आस्ट्रेलिया, सिंगापोर, थाईलेन्ड, फीजी इत्यादि देशो में विगत १० वर्षो से दुनिया के १८ देशो में समयनिकालकर जहाँ भी २-४ हरिभक्त रहते हैं वहाँ जाकर सत्संग सभा प्रारंभ कराव देते हैं । एक मात्र सत्संग प्रचार का उद्देश्य रकखर विचरण करते हैं । कहीं तो भाडे की प्रोपर्टी रखकर मंदिर बनवा देते हैं । उत्तर केनेडा में जहाँ पर हजारों की संख्या में पढे हुये विद्यार्थी नौकरी के लिये आते हैं वहाँ पर पहुंचकर सत्संग केन्द्र चालू करवा दिये हैं । इसके अलांवा राजस्थान, मारुदेश, मारवाड, वाली के प्रदेशों में नंद-संतो के समयसे सत्संग चल रहा है । वाली में शिखरी मंदिर है तथा अन्य १५ हरिमंदिर है । ३५ जितने गाँवो में सत्संगी रहते है । जो श्री नरनारायणदेव गादी के चुस्त अनुयायी है । वहाँ पर एक वर्ष से प्रत्येक गाँव में सभा का आयोजन करके वाली मंदिर के संतो द्वारा प्रति वर्ष एक उत्सव का प्रारंभ किया गया है । सुविधा का अभाव, कच्चे मार्ग होने पर भी प.पू. आचार्य महाराजश्री के मन में तो अमेरिका तथा मारवाड देनो समान है । रहने की व्यवस्था ठीक न होने पर कहते हैं चलेगा । अभी आगामी वर्षो में सत्संग की शिथिलता को वेग देने के लिये जागृतिपर विशेष बल दिया जायेगा । इस तरह अनेकों सभाओं में अपने मुख से कहते रहते हैं । व्यवस्था के विषय में श्री नरनारायणदेव गादी स्थान मुख्य मंदिर के साथ अखंड सम्बन्धित रहे इसके लिये संस्थाओं के नियम में परिवर्तन के लिये आग्रह रखते हैं । नियम एक रहेगा तो संप्रदाय में एकता रहेगी । अन्यथा भविष्य में संस्थामें रजवाडा जैसा होजायेगा । अन्त में जिस तरह रजवाडा नष्ट हो गये उसी तरह संस्था यें भी नष्ट हो जायेंगी । व्यवस्था समितियों को समझाकर एकता का प्रयास करते हैं । जिस में बड़ी संख्या में लोग प.पू. महाराजश्री के विचारो से सहमत है ।

श्री नरनारायणदेव कच्छ (भुज) मे मारबल से निर्मित विश्व का सर्व प्रथम विशाल अद्‌भुत गगनचुंबी नूतन महामंदिर का निर्माण भुज के संतो से करवाये । वर्तमान में अंजार में भी ऐसे भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है । इसके अलांवा परम भक्ता मीरा की मूभि मेवाड प्रदेश में धरियावाद में भव्य मंदिर का निर्माण जेतलपुर मंदिर के महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने करवाया । जिस मंदिर का वहाँ के अगल बगल के आदिवासी असंख्य भक्त सत्संग का लाभ लेने तथा दर्शन करने आते हैं ।

प.पू. बड़ महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने अमदावाद में भव्य श्री स्वामिनारायण म्युजियम बनवाया । जिस में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आचार्य महाराजश्री के मार्गदर्शन के अनुसार आयोजन करके आचार्य पद की गरिमा को बढाने का प्रयास किया है । इससे सत्संग को प्रेरणा देने के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री सत्संग सभाओं में कहते हैं कै आचार्य महाराजश्री हमें जैसा कहेंगे वैसा करेंगे । करते रहेंगे ।

प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गादीपदारुढ हुये दश वर्ष पुरा होने पर संत-हरिभक्तों का साष्टांग दंडवत के साथ कोटि-कोटि वंदन ।

तथा ४२ वें जन्मोत्व के अवसर पर ४२ उत्तर गुजरात के सत्संगी समाज के यमजान पद पर कलोल पंचवटी को उत्सव मनाने की अनुमति देने से ४२ समाज के सत्संगी आपका तथा श्री नरनारायणदेव की गादी का सदाऋणी है । आपने हमारे समाज पर बहुत बडा उपकार किया है ।

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र :

लिखावित स्वामी श्री ७ सहजानंदजी महाराज जत अमदावाद मध्ये साधु सर्वज्ञानंदजी तथा भक्त रुपचंद नारायण वांचजो । बीजुं लखवा कारण एम छे जे श्री डुंगरपुरथी तम पर हुंडी आवे तो तमे रुपैया २००/- बसो सुधीनी तमो शकारी (स्वीकारी) देजो ने पछी अत्र जवाब लखजो । ते तमो केशो तो अमदावाद तुरत मोकलशुं ने केशो तो अत्र अयोध्याप्रसादने भरशुं । संवत् १८८६ ना पोष वदी-११ लिखितं शुकमुनिना नारायण वांचशो । बीजुं केसर श्रीकार सुधुधुज (शुद्धज) देव सेवामां काम आवे एवुं चटकीदार सेर १ मोकलजो । जरुर मोकलजो । ने तेना रुपैया जेटला थाय ते लखी मोकलजो । लिखशो तेने तुरत अपावशुं ? बीजुं ए केसर कोई सरकार दरबारी मोटुं माणस छे तेने देवा सारुं मंगाव्युं छे ते जाणज्यो । बीजुं निर्विकारानंद स्वामी तमो याज्ञवल्क्य स्मृतिनो आचाराध्याय मिताक्षरी टीकाजुक्ता शुद्ध मले तो तपास करावी ने जरुर मकोलजो । ऐनुं अमारे अवश्य काम छे माटे लख्युं छे ॥श्रीः॥

विवरण : यह पत्र स्वयं परमात्मा श्री सहजानंद महाराजने अपने दाहिने हाथ के समान विद्वान स.गु. श्री शुकानंद स्वामी से लिखावाया था । श्रीहरि के स्वधाम गमन से पूर्व का यह पत्र लिखा हुआ है । अमदावाद श्री नरनारायणदेव मंदिर के आदि महंत स.गु. श्री सर्वज्ञानंदजी की नियुक्ति के अवसर पर स्वयं प्रभुने अपने हाथों से उन्हें हार पहनाया था । भजन भक्ति में निमग्न रहने वाले संत कभी भी स्त्री-धन का स्पर्श नहीं करते थे ।

व्यवस्था तो महाराज की आज्ञा के अनुसार करते लेकिन व्यवहार कार्य के लिये एक निष्ठावान प्रामाणिक सत्संगी को साथ रखते थे । उस समय भक्त रुपचंदजी तथा स्वामी दोनो सेवा में साथ रहते होंगे इसलिये दोनो को उद्देश्य करके यह पत्र लिखवाया गया होगा ।

संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर अमदावाद में श्री नरनारायणदेव का बनाया गया । जिस का संकल्प अक्षरधाम में से लेकर श्रीहरि इस धरा पर पधारे थे । मंदिरो के निर्माण का कार्य अमदावाद से प्रारंभ हुआ, इसलिये संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर हुआ था । इन मंदिरो में जो भी भगवत्स्वरुप प्रतिष्ठित किये गये वे स्वरुप डुंगरपुर के पत्थरों से निर्मित करवाकर मंगवाये जाते थे । उन मूर्तियो के लिये सभी से धनादि लेने के सन्दर्भ में इस पत्र में उल्लेख हैं ।

धन का लेनदेन के विषय में कैसी स्पष्टता होनी चाहिये इस पत्र से समझना चाहिये । २००/- तक की हुंडी ''स्वीकारशो'' इस तरह लिखने का मतलब यह है कि रकम स्पष्ट लिखनी चाहिये । दूसरी वात यह कि रुपये शब्द में तथा अंक में भी लिखना चाहिये । इसके अलांवा ''स्वीकारशो'' शब्द में विन्ती-**Request** का भाव है । बड़े पुरुषों की यह लाक्षणिकता है कि वे अन्य को संमान के साथ बुलाते हैं । वर्तमान में प.पू.ध.धु. महाराजश्री होंया महाराजश्री हों ये भी किसी को बुलाने के समय मान देने के लिये बहुवचन का प्रयोग करते है तुकारके नहीं बुलाते व्यक्ति को देखते हैं व्यक्ति की अवस्थाको नहीं देखते ।

इस तरह की विन्ती के बाद हुंडी स्वीकार करके उत्तर अवश्य लिखने की वात किये हैं । रसीद अवश्य लेने की वात किये हैं । धन से लेन-देन में विश्वस्त होना जीव के हित में है । यह सभी वातें सभी को सीखने के लिये है । इसके बाद आगे लिखाते हैं कि (अमें तुरंत भरी देशुं) किसी का कर्ज बाकी नहीं रखना चाहिये यह कर्ज लेने वाले की फर्ज में आता है । यदि श्रीहरि के इन निर्देशो का हमपालन करें तो निश्चित ही विवाद झगड़ा इत्यादि का प्रमाण घटजायेगा । लेकिन जीव में लोभ-मोह अहं इत्यादि का प्रमाण अधिक होने से वह विवेक शून्य हो जाता है और निर्णय नहीं करपाता । जिससे वह दुःखी होता है । यदि किसी से पैसे लिये हों तो अपना सर्व प्रथम यह कर्तव्य होता है कि उस पैसे को वापस कर दिया जाय । जिन हरिभक्तों का व्यवहार मार्ग शुद्ध होगा उसके जीवन में तकलीफ नहीं आयेगी ।

इसके अलांवा धन वापस करते समय लेने वाला व्यक्ति धन देनेवाले की अनुकूलता का अवश्य ध्यान रखे । श्रीहरि स्वयं यह पत्र में निर्देश देते हुये लिखवाते हैं कि आप कहो तो अमदावाद भेंज देंगे, अथवा अयोध्याप्रसादजी को हम कह देंगे । अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव देश के आदि आचार्यश्री थे । इसलिये धर्मवंशी आचार्यश्री को दी गयी रकम उन उन देवताओं को मिलजाती है । ऐसी श्रीहरि की आज्ञा है । काल-माया के चक्र में फंसकर मायामोह के कारण देव तथा

आचार्य की रकम को भी समझ नहीं पाते इधर उधर दे देते हैं। यह हमारी कमजोरी है।

श्रीहरि ने देश विभाग का लेख लिखाया है जिससे किसी प्रकार का विवाद होने पर किसी अच्छे साधु तथा अच्छे हरिभक्त को साथ में रखकर विवाद सान्त करने की वात की है। लेकिन हम ऐसे व्यक्ति से परिणाम की अपेक्षा रखते हैं जो नगण्य होता है। हरिभक्त मात्र रुपयों के लेनदेन में सदा ध्यान रखें अथवा संभव होतो लिखित में भी लेने देने का कार्य करें। सभी कार्य लिखवाकर में करने से विवाद की स्थिति नहीं बनेगी। प्रामाणिकता भी इसी में निहित है। दो व्यक्तियों को साथ रखकर धन के लेन देन करने से कालान्तर में सम्बन्धमें कडवाहट नहीं आयेगी।

दूसरी वात यह कि महाराजने केसर मंगवाया है, विशेष तो यह कि देव कार्य के लिये केसर मंगवाया है। किसी से कोई वस्तु भेंट में मिली हो उसे यदि भगवान को अर्पित करते हैं तो वह वस्तु निर्गुण कही जायेगी। भगवानने जो वस्तु मंगवाई है वह तो देव के लिये मंगवाई है। सरकार या दरबार के कोई बड़े आदमी हों वे सभी माध्यम मात्र हैं। इसका मूलहेतु तो देव सेवा है। परमात्मा स्वयं जिस वस्तु की अपेक्षा रखते हों तो वह मायिक नहीं हो सकती। अब देने वाले के ऊपर है कि वह देव को जो वस्तु भेंट करता है वह उत्तम है या नहीं। बाजार में मिलने वाले सभी पदार्थ उत्तम ही होते हैं ऐसा नही है, खराब भी होते है इसलिये इसका ध्यान रखकर वस्तु उत्तम क्वालिटी की हो वही देव के लिये होनी चाहिये।

भगवान को जो वस्तु दी जाय उसमें भावना होनी चाहिये। तभी भगवान उस वस्तु को स्वीकार करते हैं। किसी से धर्म कार्य के लिये जो भी वस्तु मांगते हैं उस वस्तु की जो भी कीमत हो उसे तत्काल दे देनी चाहिये। इसलिये अपने पत्र में श्रीहरिने लिखवाया है कि - तुरंत अपावशु, लखशो एटले रुपिया मोकलशुं। अन्य व्यक्ति के पास से मंगाई गई वस्तु का जो भी मूल्य हो विना तक झक के तुरंत देकर बाद में उस वस्तु का देवकार्य में उपयोग लेना जाहिये। देव को अर्पण की जाने वाली वस्तु उत्तम तथा शुद्ध होनी जाहिये। उसकी कीमत की परवाह नहीं करनी चाहिये। संप्रदाय का इतिहास इस वात का साक्षी है कि बाल लालजी के स्वरुप में मूर्ति में स्थित देवों की सेवा में यदि कोई हरिभक्त हल्की कीमत का हार चढाया है तो उस हार को मूर्ति ने अस्वीकार किया है। इस लिये कंजूसाई का धर्म त्याग कर देव कार्य के लिये उदार भाव से उत्तम वस्तु की भेंट देनी चाहिये।

हम चाहे जितने भी व्यवहारिक कार्य में हो लेकिन परमात्मा का अनुसन्धान भूलना नही चाहिये। श्रीहरि ने निर्विकारानन्द स्वामी से मीताक्षरा टीकायुक्त याज्ञवल्क्यस्मृति का आचाराध्याय मगवाया है। शिक्षापत्री में भी श्रीहरिने इस शास्त्र का वर्णन किया है।

इस शास्त्र को पढते समय यह ख्याल आना चाहिये कि महाराज की आज्ञा शुद्धता पर है। क्योंकि बाजार में ऐसी पुस्तकें भी उपलब्धहै जो मनगढन्त ढंग से अर्थ करके लिखी गई हैं लेकिन महाराजने उसे ध्यान में रखकर शुद्ध शब्द का प्रयोग किया है। जिससे मूल में कोई फेरफार नहीं होना चाहिये। गीता जैसे ग्रन्थ का अर्थघटन करने वाले आज के परिप्रेक्ष्यमें ऐसे-ऐसे कथाकार टीकाकार हो गये है जो स्वरुप को ही नष्ट कर दिया है। इसलिये मूल तत्व का सदा ध्यान रखना चाहिये। श्रीहरि के वचनामृत में से भी मन गढंत अर्थघटन करने वाले बहुत लोग है, उनसे हमें दूर रहना चाहिये। अपने संप्रदाय का नियम है कि धर्मवशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जो शास्त्र प्रकाशित हुआ हो वही वांचना चाहिये और लेना चाहिये इस कलिकाल में महाराजकी आज्ञा का लोप करने वालों की संख्या बढ गयी है जिससे आज्ञा विरुद्ध होकर कीर्तन तथा शास्त्रों में परिवर्तन करके स्वयंका भाव भर दे रहे हैं।

स्वंय श्रीजी महाराजभी शास्त्र की शुद्धता पर आग्रह रखते थे महाराज अपने समय में संतो से शुद्ध शास्त्र निर्माण की ही आज्ञा देते थे। श्रीहरि नित्यानंद, शुकानंद इत्यादि मुनियों से अथवा दीनानाथ भट्ट, प्रागजी पुराणी से कथा करवाते तो हमारा क्या कर्तव्य है इसे समझना चाहिये। आचार्य महाराजश्री की जहाँ आज्ञा का लोप होता हो वहाँ जाना नही चाहिये वैसा आचरण भी नहीं करना चाहिये।

इस तरह श्रीजी महाराज के पत्रों पर विचार करना चिन्तन करना और अपने जीवन में उतारना, यही इन पत्रों का उद्देश्य है।

श्रीहरि की प्रसादी का यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम होल नं. २ में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी भक्तजन इसका दर्शन करें तथा मनन करें और श्रीहरि का स्मरण करते हुये प्रसन्न रहें।

श्री नरनारायणदेव महोत्सव में समस्त सत्संग समाज की सेवा के सन्दर्भ में

श्री नरनारायणदेव महोत्सव अब नजदीक आता जा रहा है। महोत्सव के उपलक्ष्यमें जितने भी धार्मिक तथा सामाजिक आयोजन गाँवो में तथा शहर में हो रहें हैं उसमें समस्त सत्संग समाज तन, मन, धन से सेवा में लगे हुये हैं।

इसलिये समस्त हरिभक्तों से अनुरोधहै कि इस कार्यक्रम में जो भी हरिभक्त सहयोग देना चाहते हैं वे अपने हितवाले संतो का मार्गदर्शन प्राप्त करें अथवा अपने विस्तार के जो भी हरिभक्त आर्थिक सेवा करना चाहते हैं वे संतो द्वारा अथवा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की आफिसका संपर्क करें।

विशषजानकारी के लिये
कोठार ओफिस - ०७९-२२१३२१७०

कर्मनगरी अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर का "शताब्दी महोत्सव" धूमधाम से मनाया गया

स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर)

छपैयाधीश बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के चरण कमल से अत्यन्त पावन तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र भगवान की प्रागट्य भूमि तथा सातपुरी में से एक पुरी अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान मोक्षमूर्ति श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज का शताब्दी महोत्सव सं. २०७० भाद्रपद कृष्ण पक्ष-६ ता. १४-९-१४ रविवार से भाद्र कृष्ण-१० ता. १८-९-१४ तक श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स्वा. जगतप्रकाशदासजी के अथक परिश्रम से प.पू. बड़े महाराजश्री की छत्रछाया में तथा उन्हीं केवरद हाथों धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर ''भक्तचिंतामणी की कथा पारयण, श्रीहरियाग, महाभिषेक, अन्नकूट, अयोध्या के संतो का भंडारा तथा संमान समारंभ, धर्मकुल पूजन, पोथीयात्रा, जैसे अनेक कल्याणकारी आयोजन किये गये थे।

इस शताब्दी महोत्सव के मुख्य यजमानपद का लाभ अफ्रिका नाइरोबी के लक्ष्मणभाई ग्रूप में से - लक्ष्मणभाई भीमजीभाई राधवाणी परिवार तथा प.भ. मनजीभाई कानजीभाई राधवाणी, प.भ. करशनभाई कानजीभाई राधवाणी, प.भ. विरजीभाई कानजीभाई राधवाणी, परिवार ने लिया था । इसके अलांवा सहयजमान का लाभ प.भ. विरजीभाई मेघजीभाई पिंडोरीया परिवार (नाईरोबी) ने लिया था। इस शताब्दी महोत्सव के अवसर पर ''भक्त चिंतामणी'' कथा के पारायण का लाभ प.भ. कांतिभाई नारणभाई मनजीभाई केराई बलदिया (कच्छ) नाईरोबी वालाने लिया था ।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी के अभिषेक के यजमान प.भ. माताजी जशुबहन परबतभाई शियाणी परिवार के प.भ. मनीषभाई तथा दामिनी बहन, दीव्याबहन, दीपक, अनीताबहन, चरन, वैशाली बहन, रीतेश, पौत्र त्रिपदा, पौत्री काशीस, याहवी इत्यादि मिरजापुर वाला (वर्तमान में कंपाला-युगान्डा) थे । इस के साथ ठाकुरजी के सहयजमान प.भ. विनोदभाई डाह्याभाई पटेल तथा धर्मपत्नी चंद्रिकाबहन विनोदभाई कृते डॉ. कौसल अमदावादवाले थे। इस प्रसंग पर आफ्रिका नाईरोबी के प.भ. अनि. जयरामभाई दामजीभाई पीठडिया परिवार कृते अ.नि. रजनीभाई जयरामभाई तथा प.भ. सुरेशभाई जयरामभाई, जयप्रकाशभाई, जयकृष्णभाई, प्रदीपभाई इत्यादि परिवार के सदस्य अन्नकूट के भोग का लाभ लिये ते। प.भ. नाराण लक्षमण केराई (रापर) नाईरोबी कृते कान्तानारणभाई केराई सुपुत्र दिलन नारण केराई तथा सुपुत्री का जलनारण केराई परिवार के भाइयों ने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्थ धर्मकुल के पूजन का लाभ लिया था। प.भ. प्रेमजी लालजी हालाई (नाईरोबी) परिवार ने संतो के पूजन का लाभ लिया था।

इस शुभ प्रसंग पर हरिभक्तों के रहने की व्यवस्था का लाभ प.भ. गोविन्द नारण राधवाणी (बेन्ड पार्टी) नाईरोबी ने लिया था। सां.यो. बहनों के पूजन के यमजान प.भ. मनजीभाई शामजीभाई भुडिया सहपरिवार फोटडी (लंडनवाला) ने लिया था । इस शताबदी महोत्सव के अंगभूत श्रीहरियाग के यजमान पद का लाभ प.भ. नाथजीभाई इच्छाराम शुक्ल शिष्य मंडल कृते प.भ. विभाकर त्रिवेदी लिया था। विप्र वटुकों का यज्ञोपवित तथा गोपूजन के यजमान प.भ. प्रेमजीभाई देवजीभाई वेकरिया परिवार नारणपर (कच्छ) नाईरोबी थे। इसके अलांवा प.भ. वीरजीभाई कानजीभाई राधवाणी नाईरोबी - वीडीयो शूटिंग तथा डी.वी.डी. के यजमान पद की सेवा की थी। इस शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर कथा पारायण के वक्ता स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा) तथा स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर) थे । श्री भक्त चिंतामणी की कथा का रसपान कराये थे। श्रोता मुग्धहोकर कथा श्रवण कर रहे थे।

महोत्सव के प्रथण दिन श्री हनुमानगढी से पोथीयात्रा गाजे वाजे के साथ निकाली गयी थी । अयोध्या मंदिर के विशाल चौक में पोथीयात्रा का दिव्य स्वागत किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथों से दीप प्रागट्य कराकर शताब्दी महोत्सव का प्रारंभ किया गया था । दीप प्रागट्य में अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी,

छपैया मंदिर के महंत स्वा. ब्र. वासुदेवानंदजी तथा जूनागढ के जे.पी. स्वामी गढडा के विश्ववल्लभदासजी इस अवसर पर उपस्थित रहे । दीप प्रागट्य के असवर पर भूदेवोंने मंत्र पाठ किया था । बाद में ग्रंथ का तथा वक्ता का पूजन करके प.पू. बड़े महाराजश्री कथा पारायण का शुभारंभ करवाये थे । सहिंता पाठ के वक्ता स्वा. अजयप्रकाशदासजी (मूली) थे । इस अवसर पर अमदावाद के महंत स्वामी के प्रतिनिधिस्वा. नारायणमुनिदासजी तथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी उपस्थित थे ।

कथा प्रारंभ होने के बाद यजमानो द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया गया था । प्रथम दिन शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी ने बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के बाल लीलाओं का वर्णन तथा अयोध्यानगरी का माहात्म्य समझा गया था बाद में श्रोताओं को शताब्दी महोत्सव के महत्व समझाया था । इस के बाद अयोध्या मंदिर के महंत देवस्वामी तथा स्वा. हरिस्वरुपदासजी (मूली) जे.पी. स्वामी (मूली) छपैया मंदिर के महंत स्वामी वासुदेवानंदजी ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पमाला से स्वागत किया था । इसके बाद स्वा. जगतप्रकाशदासजीने तथा छपैया के महंत वासुदेव स्वामीने अयोध्या के महंत देव स्वामी की खूब प्रशंसा की थी । शताब्दी महोत्व के मंगल अवसर पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्रीहरि के शब्दों का स्मरण कराते हुये कहा था कि श्रीजी महाराज धर्मकुल को ''अयोध्यावासी'' कहकर बुलाते थे । इसका हमें खूब गौरव है । इसके साथ ही अयोध्या मंदिर का इतिहास वर्णन करके महोत्सव के आयोजन की खूब प्रशंस किये थे । बाद में अयोध्या के महंत देव स्वामी की व्यवस्थापन कुशलता की तथा सेवा की खूब प्रशंसा किये थे । साथ में सुभाशिर्वाद एवं धन्यवाद भी दिये थे । कथा प्रातः काल में प्रारंभ हुई जिसके वक्ता शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी थे ।

इस प्रसंग पर भुज से करीब ३० संत पधारे थे । जिसमें स.गु. स्वामी ज्ञानस्वरुपदासजी तथा स.गु. स्वा. भक्तिकिशोरदासजी ३० जितने कच्छी युवानो को साथलेकर पहले से सेवा करने के लिये पहुंचे हुये थे । जिसमें छपैया से महंत वासुदेवानंदजी, इहलाबाद से महंत स्वा. नारायणस्वरुपदासजी, नाथद्वारा से महंत धर्मस्वरुपदाजी, जेतलपुर से महंत स.गु. स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी, जूनागढ से जे.पी. स्वामी, कुजविहारी स्वामी, गढडा से विश्ववल्लभदासजी, विश्वस्वरुपदासजी, अमदावाद से स्वा. सुखनंदनदासजी, शा. विश्वस्वरुपदाजी, मूली से स्वा. हरिस्वरुपदासजी, सी.पी. स्वामी, मूली अमदावाद से आये हुये सभी संत अयोध्या मंदिर के स.गु. स्वा. देवप्रसाददासजी की गुरुभाई स्वा. विष्णुप्रसाददासजी तथा गढडा के माधवप्रसाददासजी तथा पार्षद भरत भगत इत्यादि पहले से आकर शताब्दी महोत्सव को संपन्न करने में पूर्ण योगदान दिये थे ।

इस प्रसंग पर बापूनगर से स.गु. स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी पहले से पधारे हुये थे । इसी तरह वडताल तथा बनारस से संत पधारे हुये थे । इस उपलक्ष्य में अयोध्या के अग्रगण्य मठाधीशो का १६-९-१४ को भव्य भंडारा के साथ सन्मान किया गया था । जिस में छोटी छावनी के महंत पूज्य नृत्यगोपालदासजी, हनुमानगढी के महंत पू. संत रामदासजी, महंत श्री भवनाथदासजी, महंत धर्मदासजी, पू.श्री राजकुमारदासजी, स्वामी विजयदासजी, पू. महंत बलरामदासजी इत्यादि १०० जितने संत-महंतो के विशाल मंच पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी का फूलहार से स्वागत किया था । इस प्रसंग पर महंत पू. नृत्यगोपालदासजीने अयोध्या में श्री स्वामिनारायण मंदिर का महत्व तथा विश्व फलक पर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्वजीव हितावह की भावना को प्रशंसित किया था । अयोध्यावासियों को इस अवसर पर उपस्थित होकर पूर्ण सहकार देने के लिये अनुरोधकिया था । इसके साथ प.पू. बड़े महाराजश्रीने अयोध्या के संत-महन्तो का वाक्यपुष्प से सन्मान के बाद यह वताया कि स्वामिनारायण संप्रदाय का अयोध्या के साथ बहुत पुराना सबन्धहै । श्री स्वामिनारायण भगवानने बालस्वरुप श्री धनश्याम महाराज के स्वरुप में अनेक कल्याणकारी बाल लीला करके अयोध्यातीर्थधाम को तीर्थत्वप्रदान करके पावनकारी किया है । इसके अलांवा हनुमानगढी में विराजमान श्री हनुमानजी महाराज तो हमारे (सरयूपारीण सामवेदी ब्राह्मण) कुलदेवता हैं । इस तरह अयोधा के साथ हमारा पुराना सम्बन्धहै । आप सभी अयोध्यावासी संत - महंत इस शताब्दी महोत्सव में पधाकर शोभा में अभिवृद्धि की है इसलिये आप सभी का अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद । इसके बाद कथा में विराम हुआ था और सभी संत-महंत भोजन (प्रसाद) ग्रहण करके तृप्त हुये थे ।

इस शताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर कथापारायण के प्रथम दिन वक्ता महोदय शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी ने श्री घनश्याम महाराज जन्मोत्सव की कथा वर्णन करने श्रोताओं को मंत्र मुग्धकर दिया था । संत हरिभक्तों ने घनश्याम महाराज का जन्मोत्सव रास-गर्बा के आनंद के साथ मनाया था । इस मंगल प्रसंग पर समूह महापूजा, तथा हरियाग का कल्याणकारी आयोजन किया गया था । जिस कार्य क्रम का शुभारंभ एवं पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से संपन्न किया गया था । जिसका लाभ लेने के लिये संत तथा हरिभक्त

उपस्थित थे।

इस शताब्दी महोत्सव के अवसर पर १११ जितने संत अलग-अलग धामों से पधारे थे। इस के साथ ५० जितनी सां.यो. बहने भी उपस्थित थी। इस प्रसंग पर प.पू. बड़ी गादीवालाश्री सतत तीन दिन तक उपस्थित होकर सां.यो. बहनो का तथा महिलावर्ग का उत्साह बढाई थी। इस महोत्सव के शुभारंभ मे ता. १४-९-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री, पू. बड़ी गादीवालाजी तथा धर्मकुल परिवार की तरफ से धर्मकुल कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज (हनुमानगढी) का राजभोग लगाया गया था। इस प्रसंग पर अमदावाद, बापुनगर, नवावाडज, मेघाणीनगर, बलोल, टींबा, कच्छ, सुरेन्द्रनगर इत्यादि गाँवो से भाई-बहन स्वयं सेवक के रुप में सेवा करने के लिये आये थे। उनका भी प.पू. बड़े महाराजश्री ने पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया था।

इस प्रसंग पर वडनगर से महंत स्वामी के साथ प.भ. वारोट महेन्द्रभाई शंकरलाल तथा प.भ. भीखाभाई मफतलाल ने भी स्वयं सेवक के रुप में सेवा का कार्य किया था।

शताब्दी महोत्सव के पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथो से श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक किया गया था। बाद में श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट की महा आरती पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथों की गयी थी। बाद में सभा मंडप में प.पू. बड़े महाराजश्री ने शताब्दी महोत्सव की पूर्णाहुति के प्रसंग पर ता. १८-९-१४ गुरुवार प्रात: ९-३० बजे वक्ता लोगों का पूजन करके कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे थे। बाद में यजमान परिवार द्वारा प.भ. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन हुआ और आरती उतारी गयी थी। विशाल सभा में अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी देवप्रसाददासजी को प.पू. बड़े महाराजश्री ने फूलहार पहनाकर सन्मानित किया था। इस अवसर पर छपैया के महंत स्वामी वासुदेवानंदजी, जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, इल्हाबाद के महंत स्वा. नारायणस्वरुपदासजी, कांकरिया के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा आनंदप्रसाददासजी, वडोदरा के पू. के.के. शास्त्री स्वामी तथा अमदावाद, वडताल, भुज, मूली इत्यादि धामों से पधारे हुये, महंत स्वामीयोंने स्वामी देवप्रसाददासजी (अयोध्या महंत) का धोती ओढाकर फूलहार से सन्मान किया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी को महाप्रसाद अर्पण पुष्पाबहन रवजीभाई सहजानंद ट्रावेल्स की तरफ से किया गया था। पूर्णाहुति के प्रसंग पर स्वा. जगतप्रकाशदासजी, शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (कांकरिया), स्वा. उत्तमचरणदासजी (भुज), स्वा. जयप्रकाशदासजी, स्वा. विश्ववल्लभदासजी (गढडा) के.के. शास्त्री स्वामी (वडोदरा) (इत्यादि संत महंतोने अयोध्या मंदिर के शताब्दी महोत्सव को शानदार बनाने वाले स्वा. देवप्रसाददासजी की खूब प्रशंसा की थी। इसके साथ अमदावाद के शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने भी महोत्सव के अयोजन की खूब प्रशंसा की थी।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि अयोध्या मंदिर का निर्माण बड़ी समस्याओं से भरे हुये समय में हुआ था। सतत पांच दिन तक संत-हरिभक्त उपस्थित रहकर शताब्दी महोत्सव को प्रशंसा की थी। अयोध्या मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज के १०० वर्ष के अभूतपूर्व आयोजन के लिये अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी का अभिनंदन किया गया था। सभा संचालन कुंजविहारी स्वामीने किया था। पू. बड़े महाराजश्रीने कुंजविहारी स्वामी को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद दिया था।

इस शताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर मीडिया तथा प्रचार-प्रसार का कार्य वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था। उत्तर प्रदेश के दैनिक-अमरउजाला, डेली न्यूज, हिन्दुस्तान, स्वतंत्र भारत द्वारा अयोध्यामंदिर के शताब्दी महोत्सव का अद्‌भुत प्रचार प्रसार किया गया था। इस प्रसंग पर बाबू भगत (अमदावाद) पार्षद वनराज भगत, अयोध्या मंदिर के भूपत भगत, मूली के भरत भगत, सेवक सुमीत भगत, राजन भगत, आनंद स्वामी, कुलदीप, चांदखेडा से निमेषभाई इत्यादि जनो ने मिलकर श्रद्धापूर्वक सेवा की थी।

अधोनिर्दिष्ट मंदिरो में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

गांधीनगर सेक्टर-२ : स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु शा. स्वा. देवकृष्णदासजी

वासणा-अमदावाद : स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी।

पेथापुर : स.गु. शा. स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजी।

बावला : स.गु. शा. स्वामी नन्दकिशोरदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. हरिनारायणदासजी।

मोरबी : स.गु. स्वामी बालस्वरुपदासजी गुरु पुराणी स्वा. देवनन्दनदासजी।

सापावाडा : स.गु. स्वामी माधवप्रसाददासजी गुरु स.गु. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी।

પ.પૂ. ધ.ધૂ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા તથા આશીર્વાદથી
વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા
શ્રી નરનારાયણદેવના જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

મહોત્સવ સ્થળ

શ્રી નરનારાયણ નગર, તપોવન સર્કલ, મોટેરા ગામ, એસ.પી. રીંગ રોડ, અમદાવાદ.

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ભાવિ આચાર્યશ્રી ૧૦૮ શ્રી વજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૬૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્‌શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને ''આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી.'' ''જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી.'' ''આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી.'' આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામી (જેતલપુર)એ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય ''શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ'' તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या का शताब्दी महोत्सव
प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसकी एक झलक ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या का शताब्दी महोत्सव
प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसकी एक झलक ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या का शताब्दी महोत्सव
प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसकी एक झलक ।

अल्हाबाद मंदिर में
संतो द्वारा श्रमयज्ञ

(१) डिट्रोईट (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन (२) वेस्टन केनेडा में नूतन आई.एस.एस.ओ. चेप्टर की सभा में आशीर्वचन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री (३) अमदावाद मंदिर में पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री (४) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में बापूनगर एप्रोच मंदिर सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारये हुये हरिभक्त । (५) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ओडियो विज्युअल गाईड पोट (टेब्लेट) का उद्घाटन करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री (६) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्यमें कर्म शक्ति मंदिर में संतो द्वारा सत्संग सभा (७) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में नरोडा में सत्संग सभा (८) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में माधवगढ मंदिर में समूह महापूजा (९) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में भाभर में सत्संग सभा (१०) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में नारणघाट मंदिर में समूह जनमंगल पाठ ।

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- 3 દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ
  (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

આપનો સહયોગ

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે.
૨૧,૦૦૦/-	(પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ
૫૧,૦૦૦/-	મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

Harikrushna Graphics • 982-5850-559, 987-9961-789

: महामहोत्सव का स्थल
तपोवन सर्कल, मोटेरा गाँव, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

वस्त्र का

''लिखावित स्वामी श्री ७ सहजानंदजी महाराज जत परमहंस मुक्तानंद स्वामी आदि समस्त परमहंसना नारायण वांचजो'' बीजुं लिखवा कारण एम छे जे परम हंस सर्वने वस्त्रराखवानी नीत्य अमे लखी छे ते प्रमाणे रहेवुं ॥ डोढ रुपैयाना बे पहिरवास धोतीआना ॥ तथा सवा रुपैयानी पछेडी एक तथा पांच आनानी कौपीन बे तथा अरधा रूपैयानो माथे बांध्यानो रुपाल तथा एक सवा रूपैयानी धाबली एक तथा रसोई करवा समये पेरवानो कटको एक पा रुपैया वालो तथा बे आनानुं गरणुं पाणी गारवानुं एक तथा पांच आनानी जोडी एक ॥ एवी रीत्यना मुलवाला वस्त्र नवां माग्याा विना कोईक ग्रहस्थ आपे ते लेवां पण नवो वस्त्र मांगवा नहि अने जो मागसे ते वचनद्रोही गुरुद्रोही छे अने जो माग्या विना आ वस्त्र न मले तो आटला वस्त्र प्रथम मुल लख्युं तेवा मुलवालां छो महिना पेरेलां ग्रहस्थ पासेथी मागी लेवां अने वस्त्र राखवां ते राति मृतिका मां रंगीने राखवा पण धोलां न राखवा अने शिक्षापत्रीमां कह्युं छे ते रीत्ये सर्वने वर्तवुं । बीजु जडभरतजीने पेठे निर्मानी पणे वर्तवुं तथा पदारथने विषए आसक्ति न राखवी । बीजुं आलख्युं छे ते प्रमाणे वस्त्र न राखे ने तेथी अधिक राखे तथा धणां मुलवाळुं राखे तो तेने पंक्ति बहार करवो अने तेना हाथनी रसोई न जमवी अने एक चांद्रायण व्रत करे त्यारे तेने समा लेवो ॥

संवत १८८४ ना प्रथम अषाढी-३ ॥

श्रीहरि के प्रसादी का यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में सभी के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी हरिभक्त इसका लाभ अवश्य लें। इस हस्ताक्षर का दर्शन भी बड़े पुण्य वालो को ही होता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रसादी के हनुमानजी महाराज का विशेष पूजन

काली चतुर्दशी ता. २२-१०-१४ बुधवार को प्रात: ८ बजे से ११-०० बजे तक पूजन रखा गया है। हनुमानजी महाराज के पूजन में सभी हरिभक्तों को पूजन का लाभ मिले इस हेतु से सपत्नीक बैठने की व्यवस्था की गई है। जिन हरिभक्तों को ऐसा अलौकिक लाभ लेने की इच्छा हो वे ११००/- रुपये (एक हजार एकसो रुपये) म्युजियम में भरकर पक्की रसीद प्राप्त करलें।

अधिक जानकारी के लिये मो. ९८७९५४९५९९, २७४८९५९७, ९९२५०४२६८६ प.भ. परसोत्तमभाई (दासभाई) का संपर्क करें।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि सितम्बर-२०१४

रु.।२५,०००/-	श्री स्वामिनारायण एकेडमी, निकोल नरोडा रोड, बापूनगरर
रु.।२१,०००/-	प.भ. बलवंतसिंह एम. डाभी, डांगरवा (दूध-दहीं का उत्सव मनाया गया उसके सन्दर्भ में)
रु.।११,१११/-	अ.नि.प.भ. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के ११२ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर (प्रेरक अ.नि. नन्दलालभाई बी. कोठारी कृते प्रबोधभाई सी. झाला तथा जय जे. पुजारा।
रु.।११,०००/-	प.भ. धीरजभाई के. पटेल सोलारोड, अमदावाद
रु.।११,०००/-	एक हरिभक्त, सोला रोड, अमदावाद
रु.।११,०००/-	प.भ. भूपेन्द्रभाई प्रभुदासपटेल रखीयाल (दीया फेब्रीकेशन उद्घाटन निमित्त)
रु.।११,०००/-	प.भ. पटेल कल्पेशभाई केशवलाल, भाउपुरा
रु.।१०,०००/-	घनश्याम इन्जिनीयरिंग इन्डस्ट्रीज बोपल कृते मीनाबहन के. जोषी
रु.।५,०००/-	निपुन के पुत्र चि. विवा के जन्म दिन पर घाटलोडीया कृते निर्मलाबहन भरतभाई पटेल
रु.।५,०००/-	कमलेश हरगोविंददास शाह, अमदावाद
रु.।५,०००/-	तेजस गौतमभाई पटेल, नारणपुरा.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (सितम्बर-२०१४)

ता. २१-९-१४	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया
ता. २७-९-१४	नैषद के जन्म दिन पर सायन्ससिटी, कृते जागृतिबहन तथा कमलेशकुमार सोला, अमदावाद (भाउनपुरावाला)
ता. २८-९-१४	श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज जीवराजपार्क।
	श्री स्वामनारायण मंदिर बालवा (महिला मंडल) कृते लीलाबहन सोमाभाई, हीराबहन रमणभाई, शांताबहन जेसंगभाई

- एटलान्टा मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर
- बायरन मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर
- डिट्रोईट मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर
- वोशिंग्टन मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

ज्ञानपूर्वक अच्छी दीपावली

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

दीपावली शब्द कान में पडते ही मन में अनेक विचार आने लगते हैं। नये नये कपडे पहनेंगे, भिन्न- भिन्न प्रकार की मिठाई खायेंगे, अनेकों प्रकार के व्यज्जन खायेंगे फटाका फोंडेंगे और दीपावली का आनंद लेंगे। ऐसा विचार सभी को आता है न ? लेकिन दीपावली का लक्ष्मीजी के साथ क्या सम्बन्ध?

पुराण की कथा है। एक बार क्रोधकी मूर्ति दुर्वासा मुनि को मार्ग में स्वर्ग के राजा इन्द्र मिल गये। वे अपने ऐरावत हाथी पर बैठे थे। सभी उनका जयकार बोल रहे थे। दुर्वासाजी भी इन्द्र का अभिवादन करने को खडे हो गये। जैसे ही इन्द्र की सवारी आयी उन्होने स्वयं पहना हुआ हार इन्द्र को अर्पण करने हेतु फेंका। हार ठीक इन्द्र के गले में जा गिरा। परंतु इन्द्रने उस हार को स्वीकार्य किये बिना ही हाथी के मस्तक पर रख दिया और हार तुरंत नीचे गिरकर हाथी के पाँव तले कुचल गया। दुर्वासाने अपनी आंखो से यह देखा और क्रोधित हुए। इन्द्र को श्राप देते हुए कहे कि हे इन्द्र जिस धन संपत्ति का तुम्हे इतना घमंड है। वह त्रिलोकी लक्ष्मी का नाश हो जायेगा ''ऐसा कह कर वे वहाँ से चले गये।

कुछ समय बाद त्रिलोक में से सबकुछ नष्ट होने लगा। सब जगह भूखमरे की स्थिति हो गयी। इन्द्रादि देवगण भी दुःखी हो गये। और भगवान के शरण में गये। भगवानने सभी की बात सुनकर आश्वासन देते हुए उपाय बताया की आप देवगण - गंधर्व और असुरगण साथ में मिलकर समुद्र मंथर करीये। मंडराचल पर्वत का और वासुकी नाग की सहायता लीजिए। वासुकी नाग के मुख की ओर देवगण तथा पूंछ की ओर असुरगण रहेंगे। और समुद्र मंथन करें। मंथन करने से त्रिलोक को सुख-शांति, सपत्ति पुनः प्राप्त होगी।

मंडराचल पर्वत को समुद्र में रखा गया। प्रभु से प्रार्थना की तो भगवान बडें से कछुए के स्वरुप को धारण करके अवतरित हुए। और अपनी पीठ के ऊपर मंडराचल पर्वत को धारण किया। मुख की तरफ देवगण तथा पूंछ की ओर दानवगण के होने के कारण उनके बीच में झगडा होने लगा। दानवो ने कहा हम मुख ओर रहेंगे और देवगण पूंछ की ओर। पुनः उनके बीच समाधान करवाया गया। मंथन की प्रक्रिया का आरंभ किया। समुद्र मंथन करते समय बिच निकला। जिसे लेने को कोई तैयार नहीं हुआ। उस विष को महादेवजी ने पान किया। उसके बाद ऐरावत हाथी निकला उसे इन्द्रने रख लिया। चौदह रत्नो की प्राप्ति हुई।

भगवान धन्वतंरी भी प्रगट हुए वह दिन आश्विन कृष्णपक्ष-१३ का था। इसीलिए उस दिन को धनतेरश के रुप में मनाया जाता है। दूसरे दिन को कालीचतुर्दशी के रुप में पवनपुत्र हनुमानजी की पूजा-आरधना करके मनाया जाता है। समुद्र मंथन चालू रहा। मंथन करते हुए आश्विन कृष्णपक्ष-३० (अमावास्या) को समुद्र में से साक्षात् लक्ष्मीजी प्रगट हुई। वे नारायण भगवान को प्राप्त हुई।

भगवान की आज्ञा से लक्ष्मीजी की कृपाद्रष्टि से त्रिलोक के देव, मनुष्य, प्राणियों को सुख प्राप्त हुआ। इस प्रकार सुख के दिन पुनः प्राप्त हुए इसीलिए उस दिन का नाम दीपावली पड़ा। इस दिन घर-घर में दिये जलाये जाते हैं। घर को साफ करके रंगोली बनाई जाती है। मीठाईयाँ बनाईजाती है। क्योंकि लक्ष्मीजी को स्वच्छता, मीठास, प्रकाश प्रिय है। इस दिन लक्ष्मीजी का पूजन किया जाता है। परंतु यह सदैव याद रखना चाहिए कि जो नरनारायण को छोडकर लक्ष्मीजी का पूजन करते हैं उनपर लक्ष्मीजी कभी प्रसन्न नहीं होगी।

इससे ख्याल आगया होगा कि दीपावली और लक्ष्मीजी के बीच क्या संबंधहै। प्यारे भक्तों ! तब से दीपावली उत्सव की परंपरा चली आ रही है। परंतु वास्तविक महत्व जब तक समझ में नहीं आये तब तक दिपावली का वास्तविक आनंद नहीं प्राप्त हो सकता।

जो जीवन में सदैव दपावली जैसा आनंद रखना चाहते हैं। वे ब्रह्मानंद स्वामी के इन शब्दों का स्मरण करें।

''ब्रह्मानंद ना रे व्हाला तम संग रमता मारे,

दहाडी, दहाडी छे दिवाली, हैडामां मूने व्हाला लागो छो वनमाली।''

परिवार में एकता हो ओर जीवन में इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान का दृढ आश्रय हो तो जीवन में ब्रह्मानंद स्वामी के वचन पर्याप्त प्रतीत होते हैं।

बालवाटिका के वाचन भक्तों को नूतन वर्ष की अनेकानेक शुभकामना के साथ नूतनवर्षा भिनंदन सह जय स्वामिनारायण।

पेईज नं. २५

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "संसार से विरक्ति का नियमित अभ्यास करना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम एकादशी की सत्संग सभा का नित्य श्रवण करते है और सत्संग से जुड़ते हैं। यह सब कुछ हम क्यों करते हैं ? संसार में से मन को हटाने के लिये। तो सत्संग करने के पश्चात भी संसार में से मन को हटाने के लिये क्या करना चाहिए ? तो सत्संग करने के बाद मनन, चिंतन करने से मन तृप्त - शांत होगी। यदि खाली बल्टी को नदी में से भरकर शरीर पर गिरा भी दिया जाय तो भी प्यास नहीं बुझती उसके लिए पानी पीना पड़ता है। उसी प्रकार कथा सुनने के बाद संसार में से मन को हटाने के लिये अभ्यास तो करना ही पड़ता है। संसार में से मन को हटाकर भगवान में चित्त लगाना चाहिए।

परंतु संसार मे से मन को हटाना मुश्किल है और परमात्मा से जुड़ना आसान है। परमात्मा मे मन लगाना इसलिए आसान है कि एकबार यदि संसार से मन हटजाय तो अपने आप भगवान में मन लग जायेगा। परंतु इतनी आसानी से संसार से हटता नहीं है। इसका कारण हमारे मन में भरी हुई माया है। और संसार भी मायावी है। दोनो का स्वभाव समान है। ओर जब दो समान स्वभाववाले एकत्र होतें हैं तब दोनो में ज्यादा पटती है। दृष्टांत के स्वरुप हमें भोजन या टी.वी. दिखते समय निंद्रा नही आती परंतु पूजा-जप या कथा सुनते हुए निंद्रा आती है। क्योंकि दोनो का स्वभाव विपरीत है। उसकी मायावी वस्तुके साथ ज्यादा बनती है। परंतु हमे माया परमात्मा मायावी नही है लेकिन मन मायावी है इसलिये डरना नहीं चाहिए और कायर होकर बैठना भी नही चाहिए। मनको समझाना चाहिए। जिस प्रकार प्रिंसीपाल एक ही समय चेकिंग के लिए निकले तो सब चौंकने हो जायेंगे और शिष्टतापूर्वक व्यवहार करेंगे इसीलिए वे भिन्न-भिन्न समय चेकिंग के लिए आते हैं। उसी प्रकार मनका भी अचानक चेकिंग करना चाहिए जिस से वह इधर उधर भटके नही। जगत में या महाराज में इस प्रकार मनसे झगड़ा करना चाहिए। यह आवश्यक हैं। क्योंकि समाज में अपना अस्तित्व रखने के लिये हम कई लोगों से झगड़ा करते हैं तो एक बार मन से भी झगड़ा करना उचित है। क्योंकि उसका फल भी अच्छा ही है। इस प्रकार अभ्यास द्वारा मन को तैयार करना चाहिए। उसके लिए दृढ संकल्प की आवश्यकता होती है। मुझे ये कार्य करना है किसी भी परिस्थिति में। अति तीव्र इच्छा के साथ तन-मन-धन सब कुछ एक करके, संकल्प शक्ति को दृढ करके मैं यह सब कुछ प्राप्त करके ही रहुँगा। इस दृढ निश्चय के साथ कार्य करना चाहिए। तभी परमात्मा भी सहयोग करेंगे। नहि तो विषयभोग स्वयं हमारा ही भोगकरने लगेगा। और हम को इसका ख्याल भी नही आयेगा। बहुत देर हो जायेगी - तब तक। इसी लिए जगत में अनासक्त बनकर रहना चाहिए। भगवान तो सदैव हमारा कल्याण करने हेतु तत्पर है। परमात्मा को प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा हम स्वयं ही है। इसीलिए परमात्मा का सम्पूर्ण स्वीकार्य ही परमात्मा की कृपा प्रदान करवायेगा। परमात्मा से नही जुड़ पाने का कारण स्वयं परमात्मा ही। जिस प्रकार स्कूल में पढाई शिक्षक की दया से पास नही हुआ जा सकता उसके लिए अध्ययन करना पडता है, नियमित स्कूल जाना पडता है। अभ्यास करना होता है। जैसी तैयारी करेंगे वैसा ही परिणाम प्राप्त होगा। उसी प्रकार परमात्मा की कृपा प्राप्त करनी हो तो प्रयत्न तो करना ही होगा। आप दस मिनिट ध्यान करेंगे तो दो मिनिट ही परमात्मा से जुड़ पाई। परंतु अपने आप को प्रोत्साहित करना चाहिए तभी आपको बल मिलेगा। श्रीजी महाराजने प्रथम पांचवे वचनामृत में कहा है कि, ''ध्यान करते समय यदि मूर्ति मन में ना भी दिखाई दे तो भी ध्यान करो, कायर बनकर ध्यान छोडना नही चाहिए। इस प्रकार के आग्रहवाले पर भगवान की बड़ी कृपा होती है। और इसकी भक्ति के कारण भगवान भी उसके वश में रहते हैं। ''ध्यान करते समय मन को शांत रखना चाहिए। जिस प्रकार समुद्र में हवा के कारण लहरे उठती है उसी प्रकार विचारकी लहरो के कारण मन अस्त व्यस्त हो जाता है। विचाररुपी हवा के कारण मन अशांत रहता है। हम समुद्र की लहरों को नही रोक सकते क्योंकि वह प्रकृति है। जब की हमारा मन - अंतरात्मा - हमारे हाथ में है। विचारों के उद्वेग से दुःखहोता है ऐसी चीजों के विषय में नही शोचना चाहिए। अभ्यास करके समय पर सभी कार्य पूर्णकर देना चाहिए। मृत्यु को चिरनिद्रा भी कहते हैं। हम शांतिपूर्वक सभी सोते है ? हम को कोई भी चिंता न हो तब। कुछ कार्य बाकी रह गया हो तो स्थिर नीद्रा नहीं आती है। हमें भी जगत में सारे कार्य ऐसे करने चाहिए कि चिर निंद्रा आये और इस जन्म-मृत्यु के चक्र में से छूट जायें। इसी लिए चिर निद्रा के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। कोई कार्य बाकी नही रहना चाहिए की वापस लौटकर आना पड़े। जाना तो सभी को

है, मात्र समय की जानकारी नहीं होती।

ऐसे दिव्य स्थान पर कथा का पान करो मननचिंतन करो। यंत्रकी तरह से नही प्रेम से श्रद्धा से। आप सबको महिमा है इसीलिए यहाँ आप लोग उपस्थित है। परमात्मा प्राप्त करने के संकल्प को बीच में नही छोडना चाहिए। पांच मिनिट ही सही अभ्यास करना चाहिए। अंत:करण में डूबकर अंतर में उतर जाना चाहिए। परमात्मा संकेत भी देते हैं। प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। संकल्पपूर्ति भी करते हैं। सहायता भी करते हैं। इस प्रकार संसार में विरक्ति का अभ्यास नियमित करने से भगवान शक्ति-बल प्रदान करते हैं। अन्य लोग जो सत्संग आज करते हैं उसमें और वृद्धि हो ऐसी नरनारायणदेवके चरणो में प्रार्थना।

अनु. पेईज नं. २३ से आगे

नए वर्ष में सावधान

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एक सलाट भगवान स्वामिनारायण का बड़ा भक्ता था। वह लोया का रहनेवाला था। उसे पताचला कि स्वामिनारायण भगवान लोया गाँव में पधारे हुये है, तो हमारे घर भी पधारे ? भगवान को अनपे घर आने का आमंत्रण दिया। महाराजने उसे हाँ कह दिया।

सलाट का आमंत्रण स्वीकार करके श्रीजी महाराज लोया गाँव में सलाट के घर पधारे। संत-हरिभक्त भी महाराज के साथ पधारे हुये थे। सभा में महाराज के अगल बगल में संत हरिभक्त बैठे हुये है, उनके साथ महाराज बात करते जा रहे थे, उसी समय तरगाला से कुछ लोग आये और महाराज से शिकायत किये कि हे महाराज ! ये सभी पटेल सत्संगी हुये है - हम सभी को खेलने नहीं देते। हमारी खेल को देखते भी नहीं हैं। इसलिये हमारी इनकम घट गयी है। महाराज तरगाला से कहा कि आप लोगों के पास क्या क्या कारीगरी है ? क्या क्या खेल दिखाने हैं ? यह सुनकर उन सभीने कहा कि अनेक प्रकार की क्रीडा करते है, पुतली को नचाते हैं। यह सुनकर महाराजने कहा कि तो, आप सभी अपने खेल को दिखाइये।

महाराज की आज्ञा सुनकर सभी संत, हरिभक्त तैयार हो गये। तरगाला अपने तंबू में जाकर तैयार होकर बाहर आये और पुतलियों की नाच दिखाने लगे लेकिन एक भी पुतली नांच नहीं रही थी। सभी क्रियाविहीन हो गयीं, निश्चल हो गयी। उन पुतलियों को पुन: अपने तंबू में लेजाकर तैयार किया वापस लाकर नचाने लगा, लेकिन एक पुतली हिली तक नहीं। पुन: वापस लेजाकर तैयार कर नचाया तो नाचने लगी लेकिन वही सभा में नहीं नाचती थीं। अव वे सभी तीसरी बार सभा में लाकर नचाने लगे फिर से वे सभी पुतलियां निश्चल हो गयी। अब वह तरगाला महाराज से प्रार्थना करने लगा, हे महाराज आप साक्षात् परमेश्वह हैं, हमारे हाथ में तो इन पुतलियों की डोरी है, आपके हाथ में सारेजगत की डोरी है। आपकी इच्छा नहीं होगी इसलिये हमारी ये पुतलियां नांच नहीं रही है। इसलिये आप दया कीजिये। यह हमारी आजीविका है। श्रीजी महाराज ने कहा चिंतामत करो कुछ कारण हो गया होगा, पुन: प्रयास करो। अपने तंबू में जागर एकवार और तैयारी करके आओ इसके बाद नाचने लगेंगी। तरगाला अपने तंबू में जाकर पुतलियों को सजा धजाकर पुन: वापस ले आया। अब वे पुतलियां व्यवस्थित नांचने लगी। इसे देखकर महाराज खुश हो गये और तरगाला को भोजन करवाये, बाद में उसे उपदेश देकर इनाम दिये। इस तरह की लीला महाराजने लोया में की थी।

प्रिय भक्तो ! यह जगत एक रंगमंच है। मनुष्य मात्र पुतला है। सारे जगत की डोरी भगवानके हाथ में है। भगवान की इच्छा मात्र से सभी नाचते रहते हैं। इसमें किसी का कुछ चलता नहीं है। यह कभी भूलना नहीं चाहिये कि हमारी नाडी भी भगवान के हाथ में है। जब तक उनकी इच्छा होगी तब तक यह पुतला चलता फिरता रहेगा, बाद में तो सदा के लिये स्थिर हो जायेगा। इसलिये सबकुछ का परित्याग करके सबसे पहले भगवान की भजन करनी चाहिये। भजन किये रहेंगे तो पुन: पुतला नहीं बनना पडेगा। अन्यथा पुनरपिजननं पुनरपिमरणं चालू ही रहेगा। इसलिये नूतन वर्ष में सत्संग करते हुए भगवान की भजन करलेनी चाहिये। इससे बेडा पार होजायेगा। नूतन वर्ष का सभी बाल मित्रो को सप्रेम जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम
मोबाईल नं. ९०९९९३९३७६
अक्षर महोल वाडी जेतलपुर
मोबाईल नं. ९०९९८८२५००

समस्त सत्संग की जानकारी हेतु

समस्त सत्संग को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव (बहनों का) में रहती हुई सां.यो. गीताबा तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (बहनों का) में रहती हुई विमलाबा दोनो बहने संप्रदाय की प्रणालिका (नियम) का उल्लंघन करके अपनी मर्जी से चली गयी है। जिससे उन्हें श्री नरनारायणदेव देश के शिखरी मंदिरों में या हरिमंदिरो में आश्रय नही देना है।

यह जानकारी समस्त सत्संग को होनी जरुरी है।

- आज्ञा स

श्री स्वामिनारायण

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में संत-हरिभक्तों द्वारा गाँव में सभाओं का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा, (वांटो) में ता. १२-९-१४ से ता. १४-९-१२ तक सुबह ८ से प्रारंभ ४९ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी । भाइओं तथा बहनोने बडी संख्या में धून में भाग लिया । धून की पूर्णाहुति के बाद बड़ी संख्या में सभी को प्रसाद दिया गया । इस प्रसंग पर माधवप्रिय स्वामीने कथावर्ता का लाभ दिया ।(कोठारी रजुजी डाभी, कोरडीनेटर डाभी अनंतसिंह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट

स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा महंत स्वामी पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट मे स.गु. शतानंद मुनिकृत भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य १०८ नामो की जनमंगल नामावली का पाठ ता. २०-८-१४ को शनिवार रात में ८-३० से १०-३० तक आयोजन किया गया । जिस में २०० जितने हरिभक्तों ने भाग लिया श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (नारायणघाट) की सेवा प्रेरणारुप थी । (डॉ. गोविंदभाई)

भाभर (बनासकांठा) में सत्संग सभा

बनासकांठा में सत्संग का बहुत विस्तार हुआ है । डीसा, भाभर, दियोदर, यरा आदि गाँवो में सत्संग की प्रवृत्ति की वृद्धि हुई है । अमदावाद मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी के शिष्य कोठारी मुनि स्वामी की प्रेरणा से सत्संग प्रवृत्ति गतिमान है । ता. १-८-१४ को अमदावाद से शा. राम स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर), शा. स्वा. छपैयाप्रसाददासजी तथा कोठारी शा. मुनि स्वामीने महापूजा करके ठाकुरजी के साथ हरिभक्तों के घर में पधरामणी की । कथा-वार्ता का लाभ भी दिया । आगामी उत्सवों की जानकारी दी । (नटुभाई कानाबार)

नांदोल गाँव में १५१ मिनिट की धुन का आयोजन

नांदलो में समस्त सत्संग समाज तथा नरोडा से नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. १४-९-१४ को रात में ८ से १०-३० तक १५१ मिनिट की महामंत्र धून की गयी । इस प्रसंग पर शा. चैतन्य स्वामी, शा. मुनि स्वामी आदि संतगण भी पधारे हुये थे । सभा में धून की पूर्णाहुति के बाद श्री नरनारायणदेव माहात्म्य के साथ उत्सव की जानकारी दी गयी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर प्रसाद ग्रहण किये । दहेगाँव आदि गाँवोने सुंदर सेवा की । (कोठारीश्री नंदोल)

माणेकपुर (चौधरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में अ.नि. स्वामी करशनदासजी की पुण्य तिथि के अवसर पर सत्संग सभा का आयोजन

माणेकपुर (चौधरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में अ.नि.स.गु. स्वामीश्री करशनदासजी की स्मृति में तथा श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में विभिन्न धार्मिक आयोजन किये गये । जिस में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घंटे की अखंड धून गाँव के समस्त हरिभक्तोंने साथ मिलकर की । इस प्रसंग पर अमदावाद मंदिर से शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) शा. छपैयाप्रसाददासजी, नीलकंठ स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी तथा देव स्वामीने कथावार्ता का लाभ दिया । इस प्रसंग पर अन्नकूट के यजमान मोहनभाई चौधरी थे । सभा संचालन श्री शंभुभाई चौधरीने किया । (कोठारी रमेशभाई तथा डाह्याभाई चौधरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क (नरोडा) में १५१ मिनिट की अखंड धून का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क (नरोडा) में ता. १४-९-१२ रविवार को सुबह ८ से १०-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १५१ मिनिट की धून की गयी । इस प्रसंग पर नारायणघाट से महंत पी.पी. स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, कोठारी शा. मुनि स्वामी, शा. छपैयादासजी तथा हरिप्रकाशदासजी आदि संतोने धून का लाभ लिया । संतो द्वारा कथा के बाद १००० जितने पधारे हुए हरिभक्तोंने धुनि पूर्णाहुति के बाद प्रसाद ग्रहण किया । इस प्रसंग में ट्रस्टी मंडल, युवक मंडल तथा बहनो की सेवाप्रेरक थी । (पुजारीश्री कर्म शक्ति मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडा (खारवरीया) में एकादशी सभा

मेडा गाँव में ६० वर्ष से प्रत्येक महीने की शुक्लपक्ष एकादशी को खाखरीया विस्तार के भिन्न-भिन्न गाँव में सुबह ८-०० से साम के ५-०० बजे तक भजन का आयोजन किया जाता है । ता. १९-९-१४ एकादशी को अमदावाद मंदिर से स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री), शा. छपैयाप्रसाददासजी, स्वामी निलकंठदासजी स्वामी हरिप्रकाशदासजी, प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल (ट्रस्टीश्री), प.भ.ओधवजीभाई आदि भक्तगण अमदावाद से पधारे थे । संतो ने कथावार्ता की ।

(कोठारीश्री मेडा)

माधवगढ (तलोद) में समूह महापूजा का आयोजन

माधव गढ (ता. तलोद) में ता. २१-९-१४ रविवार को समूह महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया । १२५ जितने भक्तोंने लाभ लिया ।

इस प्रसंग पर शा.स्वा. चैतन्यदासजी, शा. कुंज स्वामी तथा हरिप्रकाशदासजीने महापूजा का माहात्म्य कहा । शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) ने पूर्णाहुति की आरती की । प.भ. कनुभाई, युवक मंडल तथा महिला मंडल ने सुंदर सेवा की । गाँव के भक्तोंने तन, मन, धन से सेवा की । (कोठारीश्री माधवगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में प्रथम बार श्रीहरि स्मृति पंचान्ह रात्रीय पारायण का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क मे ता. २-९-१४ से ता. ६-९-१४ तक श्रीहरि पंचान्ह रात्रीय पारायण सम्पन हुआ ।

कथा के वक्तापद पर स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) ने सुंदर कथा की । जिस के यजमान मंदिर के ट्रस्टीश्री तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने भाग लिया । कथा प्रसंग में प.पू. लालजी महाराजश्री ने पधारकर आशीर्वाद दिये ।

अमदावाद मंदिर से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी, स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) आदि संतोने पधारकर अपनी अमृतवाणीका लाभ दिया । पूर्णाहुति के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । सभी हरिभक्तोंने पूर्णाहुति के बाद प्रसंग ग्रहण किया । सभा संचालन प.भ. भरतभाई ठक्करने किया ।

(कोठारीश्री, जीवराजपार्क मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज ८ वी सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर नये वाडज में स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा स्वामी हरिप्रकाशदासजी आदि संत मंडलने ता. ७-९-१४ रविवार को कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर आयोजन किया था । प.भ. गोविंदभाई के परिवारने यजमान पद का लाभ लिया । अंत में आरती के बाद सभी ने सभा पूर्ण होते ही प्रसाद ग्रहण किया । (कोठारीश्री, नयावाडज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से स.गु. शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी (गुरु पू. ध्यानी स्वामी) तथा चैतन्य स्वामी द्वारा श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में कुल १० सत्संग सभा का आयोजन विभिन्न गाँवो में किया गया ।

(१) गुलाबपुरा : गांव में हरिभक्तों के लिये सुंदर कथा वार्ता हुई ।

(२) ईटादरा : में ता. २२-८-१४ से २६-८-१४ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित श्री पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ का पारायण करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया । (कोठारीश्री)

(३) वागोसणा में : ता. २७-८-१४ से २९-८-१४ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित स्नेहगीता की कथा का पान समस्त गाँव के हरिभक्तोंने करवाकर देव, आचार्य के प्रति निष्ठा तथा प्रामाणिक रहने का आग्रह किया । (गुरु स्वामी)

(४) सोजागाँव मे : सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में समूह महापूजा का भी सुंदर ायोजन किया गया । शास्त्री धर्मप्रवर्तक स्वामीने महापूजा की समग्र पूजा करवाई । ता. ३०-८-१४ से ता. ३-९-१४ तक कथा आदि करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया । चैतन्य स्वामीने भी सेवा की । (कोठारीश्री मोतीलाल पटेल)

(५) कोठा गाँव में : ता. ४-९-१४ तथा ५-९-१४ इस प्रकार दो दिन धर्मप्रवर्तक स्वामीने सभा में कीर्तन भ्कति करके श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया । कोठारी हरिभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा पूजारी राम भगतने प्रेरणारुप सेवा की । कई नए आश्रित भी बहने । चैतन्य स्वामीने सभा संचालन किाय ।

(६) भात-खाशीन्ग्रा-पालडी-काकंज : में सत्संग सभा यहाँ के गाँवो में धर्मप्रवर्तक स्वामीने सत्संग सभा में धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति के साथ श्री नरनारयणदेव तथा धर्मकुल की महिमा कही । सत्तशास्त्र, नियम, निश्चय का पक्ष रखने का आग्रह किया । चैतन्य स्वामीने भी सुंदर बोधदिया । (कोठारी बंसीभाई)

(७) दियोदर में सत्संग सभा : ता. २१-९-१४ से २३-९-१४ तक दीन दिन सभा में धर्मप्रवर्तक स्वामीने व्यसन मुक्ति, श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य, आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य तथा नियम, निश्चय तथा पक्ष की बात की थी । सभा में दिलीपबाई ठक्कर तथा नविनभाई आदि हरिभक्तोंने प्रेरणा स्वरुप कार्य किया । चैतन्य स्वामीने सुंदर बाते कही । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के कोठारी मुनि स्वामी गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के साथ सहकार प्रेरणा से भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है । (दिलीपभाई ठक्कर)

(८) वणझर गाँव में सत्संग सभा : यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में धर्मप्रवर्तक स्वामी तथा चैतन्य स्वामीने सुंदर कथा में देव, आचार्यश्री का महिमा, नियम, निश्चय तथा पक्ष की सुंदर बाते की । कोठारी रमणभाई आदि हरिभक्तोने प्रेरणारुप सेवा की । (धर्मप्रवर्तक स्वामी)

(९) सरढव गाँव में सभा : श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा. स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी तथा चैतन्य स्वामीने सभा में देव, आचार्यश्री का माहात्म्य कहा । श्रीहरि द्वारा स्थापित दो गादीओं की महिमा समजाकर श्री नरनारायणदेव की दृढ निष्ठा रखने का विशें, आघर्ह किया । (कोठारीश्री)

(१०) श्री स्वामिनारायण मंदिर बोलल ७वाँ ज्ञानसत्र तथा सत्संग सभा : यहां के श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में प.पूध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आसीर्वाद से ता. ३-९-१४ से ८-९-१४ तक श्रीमद् भागवत् पंचम स्कंधकी कथा शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदासीजने कही । कथा प्रसंग में एप्रोच मंदिर से महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी तथा हरिकृष्ण स्वामीने सर्वोपरि उपासना की बाते समझाई । अमदावाद मंदिर से संतगण पधारे थे ।

प.भ. श्री रतिभाई पटेल (ट्रस्टीश्री) कोठारी अमृतभाई तथा बोलल के सभी हरिभक्तों के सुंदर सहयोग से ६०० भक्तोंने प्रसंग का लाभ लिया।(कोठारी अमृतभाई पटेल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव महोत्व के उपलक्ष में शास्त्री कूंजविहारीदासजी तथा प्रतिक भगतने गवाडा, विहार, कुकरवाडा, भीमपुरा, वजापुर, जेपरु, हातीपुरा, मारुसणा तथा देत्रोज गाँव में महापूजा, कथावार्ता आदि करके हरिभक्तो को प्रसन्न किया । सभा के यजमान अंकितभाई, दीक्षीतभाई, नरेन्द्रभाई, भक्तिभाई तथा सतीषभाईने लाभ लिया।

(शा. कूजं स्वामी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें प्राकट्यत्सव प्रसंग के उफलक्ष में हुई सभाए,
श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) समूह महापूजा

श्री नरनारायणदेव महोत्व के उफलक्ष में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में संतो की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) में समूह महापूजा ता. २०-९-१४ को सुबह ८-०० बजे की गयी।जिस में ८०० जितनी पिठ बनाई गयी थी । शा.स्वा. चैतन्यस्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदास तथा स्वामी हरिप्रकाशदासजीने महापूजा की विधि३ घंटे तक करवायी । समापन में भी यजमान की आभार विधिकी।पुजारी अश्विनभाई तथा युवक मडंल की सेवा प्रेरणारुप थी। (कोठारीश्री (श्रीनगर) कलोल)

एप्रोच (बापुनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा तथा खिचडी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगामी ४२ वे जन्मोत्सव तथा गादीपदारु दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में अपने कई मंदिरो में विशेष सत्संग सभाओ का आयोजन किया जा रहा है ।धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से ४५० वी सभा का आयोजन ता. ३१-८-१४ को यहाँ के मंदिर में किया गया।

कालुपुर, जेतलपुर, काकंरिया तथा पंचवटी कलोल मंदिर से संतगण पधारे थे।धुनि-कीर्तन भक्ति के बाद गुरुप्रसाद स्वामी, शा. भक्तिनंदन स्वामी तथा हरिकृष्ण स्वामीने प्रासंगिक उद्बोधन किया था।

अंत में खिचडी उत्सव मनाया गया।जिसका प्रसाद १८०० भक्तोने ग्रहण किया । प.भ. जनकभाई गजेराने यजमान पद का लाभ लिया। (गोरधनभाई सीतापार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल (बहनों का)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे जन्मोत्सव पर ता. १६-९-१४ को २४ घंटे की महामंत्र धुनि की गयी । जन्माष्टमी के वडनगर के महंत स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी ने महापूजा करवाई।जिस में सांख्ययोगी बहने प्रेरणास्त्रोत रुप थी।

(कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

श्री बालस्वरुप कष्ट भंजनदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से जलझीलणी एकादशी को श्रीहरि को जलक्रीडा करवा कर श्री गणतिजी की विसर्जन शोभायात्रा कांकरिया मणिनगर विस्तार में घुमाकर कांकरिया तालाव में प्रसादी के स्थान पर सुदंर सभा में उत्वीय मंडल द्वारा उत्सव करते हुए संतो की पेरक वाणी के साथ आरती की गयी । नाव द्वारा श्री गणपतिजी को जलक्रिडा करवाकर उत्सव मनाया गया । शोभायात्रा में ट्रेक्टर बग्गी, बेन्डवाजा, ऊंटगाडी, तथा अनेक वाहन थे।

कांकरिया श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्राद्ध पक्ष में १५ दिन तक भिन्न-न्नि भक्तों के घर संतो के साथ जाकर धून-भजन-कीर्तन का आयोजन किया सभी के लिये प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी । कांकरिया मंदिर के अ.नि. स.गु.शा.स्वा. हरगोविंददासजी की पुण्यतिथि के अवसर पर मंदिर में धून-भजन-कीर्तन आदि किये गये। (हिरेन पटेल कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दोलाराणा वासणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से सभी हरिभक्तोंने मिलकर जन्माष्टमी मनाई । सुंदर सिंहासन में बिराजमान घनश्याम महाराज के सानिध्य में ठाकुरजी को पालने में रखकर जन्मोत्सव मनाया गया । बहनोंने प्रसाद की सेवा की । पुजारी हसुमतीबहन की प्रेरणा से उत्सव मनाया गया। (कोठारी, जोईताभाई चौधरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वर नरोडा द्वितीय पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से, स.गु. बलदेव स्वामी गुरु गवैया स्वामी की प्रेरणा से ता. ७-९-१४ को मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १-९-१४ से ५-९-१४ तक शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच मंदिर) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन के पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया । ता. ७-९-१४ को सुबह में प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक तथा श्री घनश्याम महाराज की अन्नकूट आरती की।इस प्रसंग पर कालुपुर, जेतलपुर, एप्रोच तथा कलोल पंचवटी मंदिर से संतगण पधारे थे । शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) तथा स्वा. हरिकृष्णदासजीने प्रासंगिक उद्बोधन किया । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । सभा के बाद धून करके सभीने प्रसाद ग्रहण किया।पाटोत्सव के यजमान प.भ. गुणवंतभाई डाह्याभाई पटेल थे। (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से मोडासा श्री स्वामिनारायण मंदिर (सोनीवाडा) में अमृतभाई पटेल तथा

सुभाषभाई सोनी आदि हरिभक्तोने तथा घनश्याम मंडल की बहनोने साथ मिलकर झूलोत्सव, जन्माष्टमी तथा श्री नरनारायणदेव महोत्सव तथा ४२ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में धून की गयी। (के. बी. प्रजापति)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में प्रत्येक उत्सवो को धूमधाम से मनाया गया । चातुर्मास में सभी छोटे बच्चे सभीने यथायोग्य नियमो को धारण किये।

सावन महीने में झुलोत्सव तथा जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया । यज्ञपुरुष स्वामीने दशमस्कंधकी सुंदर कथा की । रात में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्व की आरती का लाभ प.भ. वाडीभाई नगीनभाई ठक्कर परिवारने लिया।

कोठारी अमृतभाई पटेल, श्री राजुभाई पटेल तथा प्रशांतभाई व्यास आदि युवक सेवा में जुडे थे।

(प्रविणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर कथा पारायण, विभिन्न प्रवृत्तिओ में प.पू. लालजी महाराजश्री का आगमन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से हिंमतनगर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंहिला मंडल के २७ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में पंच दिनात्मक जनमंगल कथा की गयी । जिसमें सुरेन्द्रनगर की सांख्ययोगी बहनोने कथावार्ता का लाभ दिया । रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष में महापूजा हुई । महंत स्वमीने हरिभक्तों की सेवा की प्रशंसा की थी।

हिंमतनगर मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २९-८-१४ को बहनो की सुंदर सभा हुई । बहनोने भजन-धून कीर्तन समूह में करके १२ बजे आरती की।

ता. ३१-८-१४ रविवार को खिचडी उत्सव मनाया गया । संतोने श्रीहरि की महिमा समझायी । ता. ५-९-१४ जलझीलणी एकादशी को रजत जयंती महोत्सव के अंतर्गत बहनो की सभा हुई । जिस में विहार से सांख्ययोगी बहनोने पधारकर कथावर्ता का लाभ दिया।

प.पू. लालजी महाराजश्री का आगमन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से महंत प्रेमप्रकाश स्वामी की प्रेरणा से हिंमतनगर मंदिर में बिराजमानश्री घनश्याम महाराज के २५ वर्ष पूर्ण होने पर निज मंदिर का बांधकाम पूर्ण होने पर प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया । प्रातः प.पू. लालजी महाराजश्रीके आगमन से यमजानश्री दिनेशभाई पशाभाई पटेल (सावोपरवाले) के घर पधरामणी करके नूतन ओफिस का उद्घाटन करके सभा में पधारे थे । सभी को आशीर्वाद देकर उत्सव में सेवा करने का अनुरोधकिये।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बाल सत्संग मंडल चित्र स्पर्धा

प.पू. लालजी महारजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल, कालुपुर अमदावाद द्वारा ता. ७-९-१४ को मंदिर के सभामंडप में श्री घनश्याम बाल लीला चरित्रो की स्पर्धा का आयोजन किया गया जिस में ४८ बच्चो ने भाग लिया । निम्न लिखित बालमित्रो को प्रोत्साहन इनाम दिया गया।

(१) हर्षिल रविन्द्रभाई मोदी (उं. १२ वर्ष) (२) यौहाण यश (उम्र १२ वर्ष) (३) पारेख ओम (उम्र. १२ वर्ष) (४) पाटीदार मितेष ए. (उम्. १२ वर्ष) (५) राहुल राजुभाई (उम्र. १० वर्ष)

उपरोक्त बच्चों की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । इनाम पात्र बालमिो को वोल क्लोक तथा भाग लेने वाले मित्रो को प्रोत्साहन इनाम दिया गया।

(गोपालभाई मोदी एडवोकेट)

देवसण गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से, जेतलपुर के मंहत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी की प्रेरणा से महेसाणा जिल्ला के देवरासण गाँव में ता. २५-९-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन मंदिर में सर्वोपरि श्रीहरि की पुनः प्राणप्रतिष्ठा धूमधाम से की गयी।

मूर्ति प्रतिष्ठा के अंतर्गत महापूजा का आयोजन किया गया। समग्र हरिभक्तोने उत्साह पूर्वक तन, मन, धन से सेवा की । प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन, अर्जन, आरती यजमान परिवार तथा मंदिर निर्माण में सेवा प्रदान करने वाले भक्तो में नारणपर (कच्छ) वर्तमान में लंडन में रहने वाले प.भ. नारजीभाई हीराणी, मावजी हीराणी, शिवाजी हिराणी तथा नारणभाई मोदी परिवार ने महेसाणा तथा देवरासण के चारण परिवार आदि भक्तगण थे । पू.पी.पी. स्वामी ने मंदिर तथा गाँव के इतिहास की बात थी । अंत में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर जेतलपुर, मेहसाणा, मकनसर, छपैया आदि धाम के संतगण पधारे थे।

(चिमन काका पटेल भाल)

खेरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे

श्री नरनारायणदेव गादी पदारुढ बाद प्रथम बार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. २५-९-१४ को खेरवा मंदिर में दर्शन हेतु पधारे थे । यहाँ जेतलपुर मंदिर के संतो द्वारा मंदिर में सत्संग सभा का सुंदर आयोजन किया गया । आचार्य महाराजश्री का सभी

हरिभक्तोंने पूजन, अर्चन, आरती करके आशीर्वाद लिये । सभी हरिभक्तों को पू. शा.पी.पी. स्वामीने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा सर्वोपरि गादी का माहात्म्य समझाया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भक्तों को प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये ।

(हरेशभाई खेरवा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) ब्राईटन (यु.के.)

श्रीहरि की परम कृपा से तथा श्री हरि के अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से इसो ब्राईटन श्री स्वामिनारायण मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव ता. ५-९-१४ से ता. ७-९-१४ तक विधिपूर्वक मनाया गया ।

पाटोत्सव के अंतर्गत श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकथा स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी तथा स्वामी भगवतचरणदासजी (मूली)ने की । समग्र प्रसंग में ब्राईटन मंदिर के प्रमुखश्री प्रकाशभाई कानजी, सभ्यश्रीओने तथा समग्र सत्संग समाजने सुंदर सेवा की व्यवस्था की । (शामजी भगत पुजारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोन्नीया में ९ वाँ पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका: का ९ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से अगस्ट के अंतिम सप्ताह में मनाया गया । इस प्रसंग में महंत शा. धर्मकिशोरदासजीने सुंदर कथामृत का पान करवाया । एकादशी की पूर्व संध्या को प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । तथा आशीर्वाद देकर बहुत प्रसन्न हुई । भव्य पोथीयात्रा, धुन, कीर्तन, भक्ति के साथ रास-गरबा धूमधाम से मनाया गया । बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये । संतो की प्रेरकवाणी तथा यजमानो मुकुट-गहने-वस्त्र-आभूषण आदि अर्पण किये गये तथा अन्य सेवा में योगदान करने वालों का सन्मान किया गया । अंत में अन्नकूट आरती का दर्शन करके सभीने प्रसाद ग्रहण किया। (प्रविणलाल शाह)

मूली लुईवील (कंटकी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में गणेथ उत्सव

नूतन भव्य मूली लुईवील कंटकी (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से अगस्क के अंतिम सप्ताह में गणेश चतुर्थी का उत्सव विसर्जन (एकादशी) के पवित्र दिन पर महंत शा. धर्मवल्लभदासजी, महंत शा. हरिनंदनदासजी तथा शा. व्रजवल्लभ स्वामी की उपस्थिति में हरिभक्तोने मंदिर के पास भगवान का विसर्जन करके मनाया । सुंदर कथा, वार्ता, धुन, भजन, कीर्तन सभी ने मिलकर किया । भरतभाई गांडाभाई पटेल तथा रोहितभाई डाह्याभाई पटेल जिसके यजमान थे । २५ भक्तोंने पूजा का लाभ लिया । कमिटी सभ्यगण, हसमुखभाई तथा रसोई की सेवा करने वाली बहनो की सेवा प्रेरणारुप थी ।(प्रविणभाई)

जेतलपुर चेरीहील मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, अमेरिका के जेतलपुर के चेरीहील श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव अगस्त के अंतिम सप्ताह में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री, पू. श्री बिंदुराजा, श्री सौम्यकुमार तथा श्री सुव्रतकुमार के सानिध्य में तथा आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टरो के संतो महंतो की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया ।

इस प्रसंग पर महंत स्वामी सिद्धेश्वरदासजीने श्रीहरि के ऐश्वर्य दर्शन की त्रिदिनात्मक कथा श्रोताओ को सुनाई । महानुभाव संतोने अपनी प्रेरक वाणी का लाभ दिया । महंत स्वामीने यजमान परिवार का सन्मान किया । मेहमानो तथा भक्तों का सन्मान मंदिर की तरफ से जयवल्लभ स्वामीने किया । बहनो द्वारा प.पू. बड़ी गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा तथा श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार का फूलहार से स्वागत किया गया । अंत में थाल आरती के बाद ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती की गयी ।

(प्रविण शाह)

सं. २०७१ के नूतन वर्ष का डट्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद के साहित्य केन्द्र से मिलेगा

श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शुभ संकल्प से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट मंहत)श्री के मार्गदरशन में नव निर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर विबोदरा की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में ता. ३१-१०-१४ से ता. ४-१-१४ तक बडी भव्यता से मनाया जायेगा । इस प्रसंग पर देवदर्शन, धर्मकुल दर्श; तथा कथा श्रवण के लाभ हेतु आप सभी को भावभीना आमंत्रण है ।

(भीखाभाई कोठारी)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

प.पू.ध.ध. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का
४२ वाँ जन्मोत्सव तथा गादी अभिषेक दशाब्दी महोत्सव ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014